मार्च 2003
Rs. 10/-
चन्दामामा

ACTIVE
YANKEE
HERO
Heroes start early.
Ride, race, take a tumble or even take a fall.
Because it's never too early to be a hero.

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०७ मार्च - २००३ सञ्चिका - ३

रामसेन का निर्णय १९

वृक्ष पर देवी ३४

माया सरोवर-१४ १३

विघ्नेश्वर ४५

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of
Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
ANDAMAMA INDIA LIMITED
lo. 82, Defence Officers Colony
kkatuthangal, Chennai - 600 097
ail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

पढ़ने की आदत विकसित करें

बड़ों के द्वारा कही गई कहानियाँ सुनने के बच्चे आदी हो गये हैं। कभी बच्चों के लिए दादी की कहानियाँ घरों में बड़ी आम बात थी। फिर ऐसी कहानियों की पुस्तकें आ गई जिन्हें दादियों और अन्य बड़ों की अनुपस्थिति में बच्चे स्वयं पढ़ सकें। बाल साहित्य का विकास एक अद्भुत घटना है, क्योंकि प्रत्येक देश में, प्रत्येक भाषा में बच्चों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। भारत में भी, जो एक विशाल देश है, पुस्तकें लिखी और प्रकाशित की गई हैं। इनके पाठकों का भी अभाव नहीं रहा है जिन्होंने मनोरंजन, ज्ञान और शिक्षा के लिए उन्हें पढ़ने में आनन्द अनुभव किया। फिर भी, इतनी पर्याप्त संख्या में पुस्तकें नहीं हैं जो प्रत्येक बालक तक पहुँच सकें।

एक छोटे द्वीप-राष्ट्र सिंगापुर का दृष्टान्त लें, जहाँ सिंगापुर भारतीय विकास असोसियेशन द्वारा सफलतापूर्वक कुछ नवीन प्रयोग किये जा रहे हैं। एक प्रयोग है - पठन परियोजना - 'प्रोजेक्ट रीड'। सप्ताह में एक या दो बार सि.भा.वि.अ. के स्वयंसेवक घर-घर जाकर बच्चों को पढ़कर सुनाते हैं। बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए पठन केन्द्र (रीडिंग सेन्टर्स) चलाये जाते हैं जिनका संचालन भी स्वयंसेवक करते हैं। बच्चे नियमपूर्वक इन केंद्रों में जाते हैं। सामूहिक और क्षेत्रीय पुस्तकालयों में पुस्तकालय हेल्पडेस्क भी कार्यरत हैं। इस सुविधा का लाभ समस्त परिवार के लोग उठाते हैं। संक्षेप में, पुस्तकें बच्चों तक पहुँच पा रही हैं।

भारत में, अनेक राज्यों में पुस्तकालय आन्दोलन सुदृढ़ है। इसलिए पठन की आदत में गिरावट कभी नहीं आनी चाहिए। पुस्तकें पढ़ने के लिए ही होती हैं। एक कहावत है-''पठन मनुष्य को पूर्ण बनाता है।''

सम्पादक : *विश्वम*

Visit us at : http://www.chandamama.org

'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक-१८

यहाँ हमारे राष्ट्रवादी आन्दोलन के कुछ नेताओं का प्रसंग है। क्या उन्हें जानते हो?

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

1. मैं सन् १९०५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष था। सिद्धान्तः मैं मध्यम मार्गी था। मैंने 'सर्वेण्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी' की स्थापना की। मैं कौन हूँ?

2. मैं सन् १९१८ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ३४वें अधिवेशन की अध्यक्षता की। मैंने सन् १९३४ में एम.एस. अने के साथ एक नई पार्टी की स्थापना की। मेरा नाम क्या है?

3. मैंने केरल में अपनी रियासत पर अंग्रेजी सेना द्वारा आक्रमण को सफलतापूर्वक रोका। लोग मुझे केरल सिंहम के नाम से पुकारने लगे। क्या तुम मुझे नहीं जानते?

4. इंडियन सिबिल सर्विस में उत्तीर्ण होनेवाले चार भारतीयों में मैं प्रथम था। मुझे भारतीय राष्ट्रवाद का जनक भी कहते हैं। मेरा नाम क्या है?

5. मैंने अपनी वकालत सन् १९२१ में छोड़ दी और सन् १९२३ में स्वराज्य पार्टी की स्थापना की। मुझे जानते हो? नहीं?

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें :

मेरा प्रिय राष्ट्रीय नायक .... है, क्योंकि

....

प्रतियोगी का नाम: ....

उम्र: .... कक्षा: ....

पूरा पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर: ....

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ अप्रैल २००३ से पूर्व भेज दें।

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-१८
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईक्काडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुईं तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

HERO CYCLES

Statement about Ownership of CHANDAMAMA (Hindi)

Rule 8 (FormVI), Newspaper (Central) Rules, 1956

1. Place of Publication	82 Defence Officers Colony Ekkatuthangal Chennai-600 097
2. Periodicity of Publication	MONTHLY 1st of each calendar month
3. Printer's Name Nationality Address	B. VISWANATHA REDDI INDIAN 82 Defence Officers Colony Ekkatuthangal Chennai-600 097
4. Publisher's Name Nationality Address	B. VISWANATHA REDDI INDIAN 82 Defence Officers Colony Ekkatuthangal Chennai-600 097
5. Editor's Name Nationality Address	B. VISWANATHA REDDI (Viswam) INDIAN 82 Defence Officers Colony Ekkatuthangal Chennai-600 097
6. Name and Address of individuals who own the paper	Chandamama India Ltd. Board of Directors: 1. P. Sudhir Rao 2. Vinod Sethi 3. B. Viswanatha Reddi 82 Defence Officers Colony Ekkatuthangal Chennai-600 097

I, **B. Viswanatha Reddi,** *do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.*

1st March 2003 — (Sd.) B. VISWANATHA REDDI
Publisher

Good news for young bookworms!
Hiya! What has hit the animal world?
Listen hard and look keenly.
D'you hear the jingle of the jungle?
JUNGLE JINGLES
Hurry, pals! Remember - only early birds catch the worm!
A set of five story books with the whackiest and most interesting collection of animal stories ever written.
Special Offer!
Save Rs. 50/-
From
CHANDAMAMA and Popular prakashan
DISCOUNT COUPON
ome into the enchanted world of JUNGLE JINGLES and avail a discount of
50 on a set of five books on the cover price of Rs 200. Or you can get Rs
off on each title of Rs 40. Offer open for a limited period only. So hurry!
k the titles you want.
The Itch to Fly and Other Stories
The Tiger with the Most Wonderful Tail and Other Stories
The Great Escape and Other Stories
The Donkey's Downfall and Other Stories
The Cunning Pelican and Other Stories
d your payment by DD or MO to: Popular Prakashan Pvt. Ltd.,
-C M.M Malaviya Marg, Popular Press Building, Tardeo, Mumbai 400034.
enquiries contact sales@popularprakashan.com Visit our site at www.popularprakashan.com

कल्पना चावला को सलाम!

दिल दहला देनेवाली अन्तरिक्ष दुर्घटना में भारत में जन्मी कल्पना चावला की दुखद मृत्यु पर हाल ही में पूरे विश्व में शोक मनाया गया।

हरयाणा के करनाल निवासी बनारसी दास चावला तथा संयोगिता की छोटी बेटी कल्पना हर बच्चे की तरह चाँद पर मुग्ध थी। जैसे-जैसे मोटू - इसे प्यार से इसी नाम से बुलाते थे - बड़ी हुई, वैसे-वैसे उसमें हवाई जहाज के प्रति सनक बढ़ती गई। करनाल में फ्लाइंग क्लब था और वह सिर पर मंडराते वायुयानों को घण्टों निहारा करती थी।

कल्पना ने १७ वर्ष की आयु में वैमानिक अभियन्त्रण पाठ्यक्रम के लिए पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज, चण्डीगढ़ में दाखिला लिया। जैसा कि उसने अपने अन्तरंग मित्रों को बताया था, वह चाँद पर पहुँचने का सपना देख रही थी। तत्पश्चात वह एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में मास्टर डिग्री के लिए अमेरिका के टेक्सास विश्वविद्यालय गई। उसने कोलरैडो विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि भी अर्जित की।

सन् १९९४ में कल्पना अन्तरिक्ष उड्डयन में प्रशिक्षण लेने के लिए 'नासा' (NASA) में शामिल हो गई। वह सन् १९९७ में १९ नवम्बर को अन्तरिक्ष में जानेवाली 'कोलम्बिया' की उड़ान के लिए चालक दल की सदस्य चुनी गई। इस प्रकार अन्तरिक्ष में यात्रा करनेवाली वह पहली भारतीय महिला बनी। अन्तरिक्ष यात्रा के दौरान उसने यान के बाहर 'स्पेस वाक' किया।

विगत १६ जनवरी को जानेवाली 'कोलम्बिया' की दूसरी उड़ान के लिए उसका चयन किया गया। उसने तब, एक ध्वज के लिए जिसे वह अपने साथ ले जाना चाहती थी, अपनी पूर्व गणित अध्यापिका निर्मला नम्बूदिरिपाद से जो अब बंगलोर में काम करती है, सम्पर्क स्थापित किया। रेशम का ध्वज एक छात्र को आशीर्वाद देते हुए अध्यापक के दो बन्द हाथों को चित्रित करता था। इस पर एक शीर्षक भी लिखा था : ''राह दिखाते हुए हमेशा''।

कल्पना ने सचमुच राह दिखाई। प्रत्येक वर्ष करनाल में अपने स्कूल टैगोर बाल निकेतन के दो छात्रों को नासा भ्रमण के लिए प्रायोजित करती, जहाँ वह उन्हें घुमाती और उनमें दृढ संकल्प, साहस तथा दूरदर्शिता की शिक्षा देती।

अन्तरिक्ष शटल से उसने चण्डीगढ़ में अपने कॉलेज में यह सन्देश भेजा :

''सपनों से सफलता तक का मार्ग अवश्य है। उसे प्राप्त करने की अन्तर्दृष्टि, आगे बढ़ने का साहस तथा उसमें लगे रहने का अध्यवसाय आप को मिले।''

सम्भवतः यह युवा पीढ़ी की ओर ही संकेत था जो उसका अनुसरण करना चाहती हो किन्तु त्रासदी के कारण जिसे हतोत्साहित नहीं हो जाना चाहिए।

कल्पना चावला ने भारत को गौरवान्वित किया है। हम उन्हें सलाम करते हैं।

प्रच्छन्न प्रशान्ति - मणिकरण

हिमाच्छादित ऊँची चोटियों, गहरी खाइयों तथा यायावर नदियों के साथ रहस्यमय हिमालय पर्यटक को अनेक विविध नयनाभिराम स्थल भ्रमण करने का अवसर प्रदान करता है। हिमालय की गोद में स्थित कुलू घाटी, जिसे प्रायः रजत घाटी या देवभूमि के नाम से पुकारा जाता है, ऐसे प्रिय पर्यटक-गन्तव्यों में से एक है। हिमाचल प्रदेश के अन्तर्गत इसी नयनाभिराम घाटी में बसा है मणिकरण।

एक हजार ७३७ मी. की ऊँचाई पर पार्वती नदी के तट पर बसा मणिकरण अपने ऊष्ण जलस्रोतों के लिए प्रसिद्ध है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इन गर्म स्रोतों में स्नान करने से सभी प्रकार के रोग ठीक हो जाते हैं। ये गर्म स्रोत शिलाओं के नीचे से फूटते हैं। पानी का ताप ८८ डिग्री सेंटिग्रेड से ९५ डिग्री सेंटिग्रेड के बीच रहता है। विश्वास किया जाता है कि इन गर्म झरनों में केवल २० मिनट में चावल पकाया जा सकता है।

भूवैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि इन स्रोतों में यूरेनियम तथा अन्य रेडियोधर्मी पदार्थ विद्यमान हैं। मणिकरण सिक्खों और हिन्दुओं दोनों के लिए तीर्थस्थल भी है। यहाँ का गुरुद्वारा सिक्खों के पहले गुरु, गुरु नानक के यहाँ आगमन की स्मृति में बनाया गया है। कहा जाता है कि यहाँ उन्होंने ध्यान किया था। यहाँ का रघुनाथजी मंदिर १५वीं शताब्दी में निर्मित किया गया था। भगवान राम का यह मंदिर असंख्य भक्तों को आकृष्ट करता है।

वहाँ कैसे पहुँचे

मणिकरण कुलू से ४५ कि.मी. पर स्थित है। यहाँ सिर्फ सड़क द्वारा जाया जा सकता है। निकटतम हवाई हड्डा भुन्तर में है जो मणिकरण से ३५ कि.मी. दूर है।

चतुरतर अर्द्ध !

बहुत पहले जमाने की बात है। दो पहलवान थे। एक का नाम था बलवान और दूसरे का जादू। दोनों ने एक दूसरे की शक्ति के बारे में सुन रखा था। दोनों विशालकाय, बड़ी-बड़ी आँखों, बड़े-बड़े कान और बड़े मुखवाले, चलते हुए पर्वत के समान लगते थे। ये साधारण व्यक्तियों को मक्खी की तरह मसल सकते थे और एक बार में एक पीपा पानी गड़क सकते थे। इनके घर पूरी घाटियों में फैले थे और वृक्षों से ये दातून करते थे।

एक दिन जादू ने बलवान से मिलने का फैसला किया। जादू उग्र स्वभाव का था और हमेशा अपने साथ एक गदा रखता था। जो भी उसकी बात से सहमत नहीं होता उसकी वह गदे से पिटाई कर देता था। इसलिए स्वभावतः बलवान उस ईर्षालु भीमकाय के सामने नहीं आना चाहता था। लेकिन ऐसा भीमाकार व्यक्ति कहीं छिप भी नहीं सकता था।

''ओह ! मैं क्या करूँ? वह जादू अकारण ही मुझसे झगड़ा कर लेगा। मैं कैसे बचूँ? बलवान दुखी होकर कहने लगा। तभी उसकी पत्नी शीलावती वहाँ पहुँच गई। अपने पति की परेशानी सुनकर दुष्ट जादू को मात देने के लिए उसने एक योजना बनाई।

''मेरे प्रिय पति, तुम चुपचाप रहना और चारपाई पर लेट जाना। बाकी चीजें मैं संभाल लूँगी। लेकिन जब तक मैं न कहूँ, इधर-उधर हिलना नहीं।'' शीलावती ने उसे हिदायत दी।

''प्रिय पत्नी, आखिर तुम क्या करने जा रही हो? भयभीत बलवान ने पूछा।

''शान्त रहो। जब तक मैं यहाँ हूँ जादू तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।'' शीलावती ने कहा। उसने बलवान को सुलाकर रजाई ओढ़ा दी। फिर आगन्तुक के स्वागत के लिए बाहर गई।

जादू मार्ग में चट्टानों और वृक्षों को रौंदता हुआ आ पहुँचा। सिंहों और बाघों की गुफाओं को अपनी गदा से ठोकर मारकर उन्हें आतंकित कर दिया था। खरगोश और चूहे भाग गये क्योंकि उनके बिल-जादू के विशाल कदमों तले दब गये थे। जड़ से उखड़े हुए पेड़ों से बाज और उल्लू उड़कर फड़फड़ाने लगे। जादू को खुद यह सब मालूम नहीं था कि कितनों के लिए वह कितना बड़ा संकट बन गया था।

शान्त-स्थिर और सन्तुलित शीलावती अपने दरवाजे पर जादू से मिली। अभी वह अन्दर आने के लिए जादू को निमंत्रित भी नहीं कर पाई थी कि वह गरजा, ''वह डरपोक बलवान कहाँ है? क्या वह स्वयं मुझे लेने के लिए नहीं आ सकता?''

''मेरा पति शहर में नहीं है। वह पड़ोस के जंगल में विवाहोत्सव में शामिल होने गया है। लेकिन मैं आपके लिए क्या कर सकती हूँ?'' शीलावती ने बहुत नम्रतापूर्वक कहा।

''मुझसे झूठ न बोलो। यदि तुम्हारा पति बाहर नहीं आता तो मैं तुम्हारी सारी मुर्गियाँ खा जाऊँगा।'' जादू ने दुर्भावना के साथ कहा।

''मुर्गियाँ? कैसी मुर्गियाँ? तुमने इन पिस्सुओं को गलती से मुर्गियाँ समझ ली होंगी। जब मेरा पति हर रोज अपने बाल पर कंघी करता है तो ये दर्जनों में गिरते हैं। तभी गोशाला से गायों के रंभाने की आवाज आई। जादू ने उस दिशा में देखकर गरजते हुए कहा, ''अब यदि अपने पति को नहीं बुलाओगी तो मैं तुम्हारी सारी गायों को मारकर उन्हें अपना भोजन बनाऊँगा।''

''गायें? क्या तुम पागल हो गये हो? वे हमारे पालतू चूहे हैं। मुझे उन्हें रखने के लिए अपने पति को कई दिनों तक मनाना पड़ा। देखो, वह पालतू जानवरों को रखना वास्तव में पसन्द नहीं करता।'' शीलावती ने कहा। जादू ने भय का संकेत महसूस किया। ये पिस्सू मुर्गियों के आकार के हैं और चूहे पूर्ण विकसित मवेशी जैसे हैं। लेकिन उसने अपने को भयभीत होने नहीं दिया। यह बलवान निश्चित रूप से हमसे अधिक शक्तिशाली नहीं हो सकता।

''हे, स्त्री! मुझे अन्दर आने दे। देखूँ, वह कायर कहाँ छिपा है।'' उसने पूरा घर छान मारा। अन्त में शयन कक्ष में आया।

''मेहरबानी करके शोर न करो। बड़ी मुश्किल से अपने बेबी को अभी सुलाया है।'' जादू के पीछे खड़ी शीलावती ने कहा।

''तुम्हारा बेबी!'' जादू डर गया। उसने चारपाई पर नजर डाली जिसपर बलवान सो रहा था। ''यदि बलवान का बेबी इतना विशाल है तो बलवान कितना बड़ा होगा! मैंने बलवान से मिलने का निश्चय कर गलती की।'' जादू ने दब्बू की तरह खींसें निपोर दीं।

''श्रीमती! मुझे दुख है कि मैं तुम्हारे पति से नहीं मिल सका। उसके लौटने पर मेरी ओर से सम्मान देना।'' इतना कहकर जादू लौट गया।

शीलावती अन्दर गई और बिस्तर से पति को निकाला। खुशी से उछलते हुए बलवान ने पत्नी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उसने दुष्ट जादू को बड़ी चतुराई से संभाल लिया था। ''मैं बड़ा भीमकाय हूँ, लेकिन दोनों में तुम अधिक चतुर हो।'' उसने पत्नी की तारीफ करते हुए कहा।

माया सरोवर

14

(जयशील तथा सिद्धसाधक को नदी के पुल के निकट मकरकेतु के साथ देवशर्मा भी दिखाई दिये। उसी वक्त हंसों से जुता एक रथ आकर नदी में उतरा। उस रथ से फिसल कर माया सरोवरेश्वर के साथ कांचनमाला एक जंगल में गिर गई थी; उनकी रक्षा के संबंध में वे लोग सोच ही रहे थे, तभी राक्षसों ने रथ पर आक्रमण कर दिया। इसके बाद –)

हंसों से जुते रथ को जब जलवृक राक्षसों ने घेर लिया, तब उस दृश्य को देख जयशील ने दूर फेंकी गई अपनी तलवार को झट हाथ में ले लिया और कहा, "ओह ! ये ही जलवृक राक्षस हैं? अरे इनके सिर तो देखने में भेड़ियों के बराबर हैं और बदन मानव के जैसे लगते हैं ! ये तो बड़े ही विचित्र प्राणी मालूम होते हैं।"

उस दृश्य को देखते ही मकरकेतु अपने शूल को उठाये व्यग्रता के साथ नदी की ओर बढ़ा, फिर रुककर जयशील से बोला, "जयशील ! ये जल वृक राक्षस हंसों के रथ पर क़ब्जा करना चाहते हैं; उनका अंत करने के लिए क्या तुम हमारी मदद नहीं कर सकते?"

जयशील ने इतमीनान से अपनी तलवार को म्यान में रखते हुए कहा, "सुनो, हमारे राजा कनकाक्ष के बच्चों को तुम्हारे माया सरोवर का राजा अपहरण करके ले गया है। उन बच्चों की रक्षा करने की जिम्मेदारी मुझपर है। साथ ही
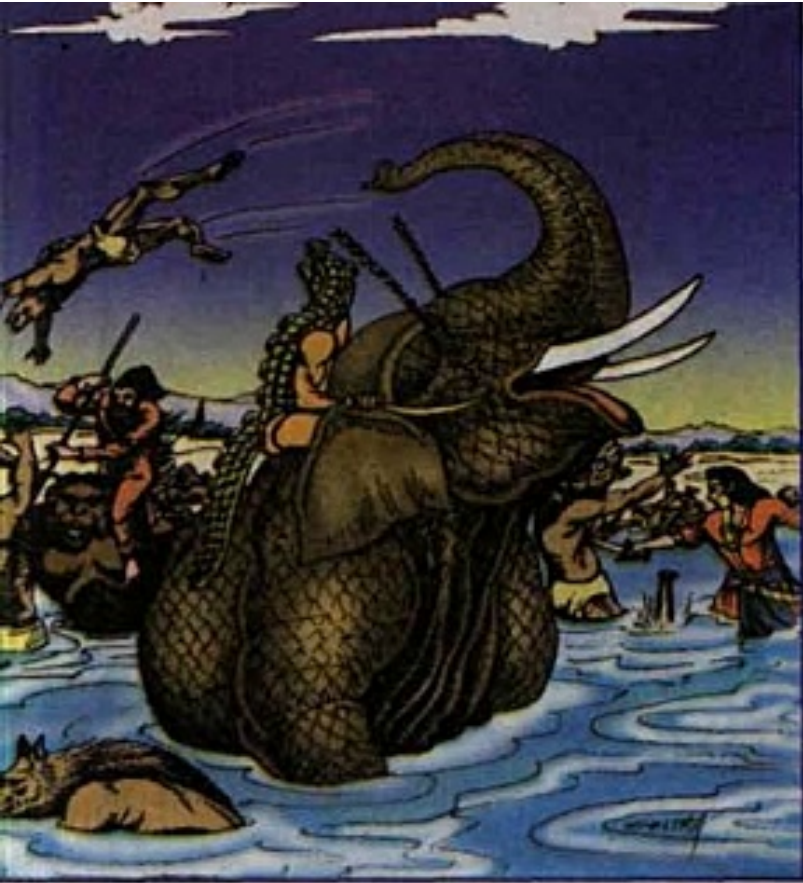
इस दुष्टता के लिए मैं तुम्हारे राजा से बदला भी लेना चाहता था। इस वक़्त हंसोंवाले रथ में तुम्हारा राजा दिखाई नहीं दे रहा है, यह उसके लिए भाग्य की बात समझो।''

यह उत्तर सुनकर मकरकेतु चकित रह गया और देवशर्मा से बोला, ''वैद्यदेव ! मैंने कल्पना तक नहीं की थी कि जयशील हमारे साथ ऐसी गहरी दुश्मनी रखते हैं। आपने स्वयं देखा है कि माया सरोवरेश्वर ने राजकुमार और राजकुमारी की किसी प्रकार की हानि नहीं की, बल्कि वे कितने प्रेम और वात्सल्य के साथ उनका पालन-पोषण कर रहे हैं। ये तो उन्हें गलत समझ रहे हैं।''

''जयशील ! मेरी बात सुनो। पहले अपने म्यान से तलवार निकालो। सरोवरेश्वर के साथ बदला लेने का यह वक़्त नहीं है।'' देवशर्मा ने समझाया।

जयशील ने दूसरे ही क्षण अपने म्यान से तलवार खींच ली। उसकी देखादेखी उसी समय सिद्धसाधक भी ''जय महाकाल'' पुकारते हुए नर वानर पर सवार हुआ। पलक मारते ही सब लोग भयंकर गर्जन करते नदी में कूद पड़े और जलवृक राक्षसों पर आक्रमण कर दिया।

इस बीच हंसों के रथ में स्थित अंगरक्षक जल राक्षसों से रथ को बचाते इधर-उधर दौड़ाने लगा। हाथी जलग्रह पर सवार हो शूल घुमाते हमला करने को तैयार मकरकेतु तथा नर वानर पर स्थित सिद्धसाधक को देख जल राक्षस घबरा गये। वे लोग भाग जाने के विचार से जल में डुबकी लगाने को तैयार हुए, तभी मकरकेतु द्वारा उकसाया गया जलग्रह उन्हें अपनी सूँड में दबाकर नदी के किनारे फेंकता गया। जयशील पानी में तैरते हुए जो भी दुश्मन हाथ में आया, उसे काटता गया।

सिद्धसाधक का नर वानर एक जल राक्षस को अपने दोनों हाथों में दबोच कर साधक के साथ उसे भी नदी के जल से बाहर उठा लाया। उसके पीछे मकरकेतु, सर्पनख और सर्पस्वर किनारे पर आ पहुँचे। पर जयशील हंसों के रथ पर सवार हो अंगरक्षक पर तलवार का निशाना करके उसे धमकी देते हुए बोला, ''अबे सरोवरेश्वर के अंगरक्षक ! तुम चुपचाप इस रथ को किनारे की ओर ले चलो। रथ के साथ अगर तुमने आकाश में उड़ जाने की कोशिश की तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग हो जाएगा। सावधान !''

ये बातें सुन अंगरक्षक ने अपनी आँखें लाल-पीली करके कहा, "जानते हैं, मैं कौन हूँ? महान शक्तिशाली माया सरोवरेश्वर का मैं अंगरक्षक हूँ। आज तक इस प्रकार किसी ने यों मेरा अपमान करने की धृष्टता नहीं की।"

"मैं वही धृष्टता करने जा रहा हूँ। लो, हाथ में तलवार!" यों कहकर जयशील ने अपनी तलवार नीचे रख दी और अपने बायें हाथ से अंगरक्षक की गर्दन पकड़कर मरोड़ दी। अंगरक्षक कराह उठा, "आप तो बड़े साहसी और शक्तिशाली मालूम होते हैं ! मेरी गर्दन छोड़ दीजिए।"

जयशील अपनी पकड़ ढीली करके बोला, "तुम अब रथ को नदी के किनारे ले चलो। तुम्हारे मालिक के बारे में बहुत सारी बातें करनी हैं।"

अंगरक्षक ने चुपचाप हंसों को हांककर रथ को किनारे लगा दिया। रथ के किनारे लगते ही सिद्धसाधक उत्साह में आकर अपने नर वानर से कूद पड़ा। वानर के हाथों में जकड़े जल राक्षस के दोनों कान पकड़कर वह नीचे उतरा, फिर हंसों के रथ के पास जाकर बोला, "जयशील ! मैं इस रथ पर नर वानर के साथ हिमालय में जाकर तपस्या करना चाहता हूँ। क्या यह हम दोनों को ढो सकता है?"

जयशील ने इस अटपटी सवाल को सुन मुस्कुराते हुए रथ में स्थित अंगरक्षक की ओर देखा। अंगरक्षक रथ के पहिये को अपनी आँखों से लगाकर बोला, "महाशयो ! यह अत्यंत महिमान्वित है। इसमें जुते हंस केवल इसकी शोभा बढ़ाने के लिए ही हैं। यदि हमारे सरोवरेश्वर चाहेंगे तो यह चौदहों भुवनों की परिक्रमा करके मिनटों में वापस लौट सकता है।"

"ओह ! ऐसी बात है? ऐसी महिमावाला यह रथ गीधों के हमले से क्यों उलट गया? उस वक़्त तुम्हारे सरोवरेश्वर भी तो रथ पर थे न? बकवास बंद न करोगे तो तुम्हें शूल चुभोकर नदी में फेंक दूँगा।" इन शब्दों के साथ सिद्धसाधक ने अंगरक्षक को सावधान करते हुए उसकी ओर शूल बढ़ाया।

जयशील ने उसे शांत होने का आदेश देकर समझाया, "सिद्धसाधक ! रथ पर से जंगल में न केवल सरोवरेश्वर ही गिरा, बल्कि हिरण्यपुर की राजकुमारी कांचनमाला भी तो गिर पड़ी है। तुम कदापि यह बात मत भूलो।"

मकरकेतु ने चिंतापूर्ण स्वर में कहा, ''जयशील ! हम अपने राजा सरोवरेश्वर को ढूँढ़कर उनकी रक्षा के लिए इन हंसों के रथ पर रवाना हो रहे हैं। न मालूम वे कैसी विपदा में होंगे?''

''हम भी रवाना हो रहे हैं। हमें भी राजकुमारी कांचनमाला का पता लगाना है। अगर वह किसी भयंकर खतरे का शिकार हो गई, तो उसकी पूरी जिम्मेदारी तुम्हारे राजा की होगी। हम तुम्हारे राजा का सिर राजा कनकाक्ष को भेंट कर देंगे।'' जयशील ने कहा।

देवशर्मा अब तक सर झुकाये विचार मग्न था, जयशील की बातें सुन उसने झट से सर उठाकर कहा, ''जयशील ! मैंने इसके पूर्व ही बताया है कि यह बदला लेने का वक़्त नहीं है। हमें तुरंत यहाँ से रवाना होकर माया सरोवरेश्वर तथा कांचनमाला का पता लगाना है।''

''जी हाँ! आप ठीक कहते हैं। माया सरोवरेश्वर की बात तो मैं नहीं जानता, पर कांचनमाला का पता लगाना मेरे तथा सिद्धसाधक के लिए अत्यंत ही ज़रूरी है। भाई सिद्धसाधक ! क्या हम अब चलें?'' जयशील ने कहा।

सिद्धसाधक ने एक बार चारों तरफ़ दृष्टि दौड़ाई, तब संदेहपूर्ण स्वर में कहा, ''ऐसे भयंकर जंगल में उनका पता कैसे लगायें?''

सिद्धसाधक के ये शब्द सुनकर हंसों के रथ से अंग रक्षक किनारे उतर पड़ा, पर सिद्धसाधक की ओर बढ़ते नर वानर की तीक्ष्ण दृष्टि देख सहम गया और दो-चार क़दम पीछे हटकर बोला, ''महाशयो, हमारे राजा तथा कांचनमाला जंगल में जिस स्थान पर गिर गये हैं, उस स्थान को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। उस प्रदेश के निकट ही एक पहाड़ है और गगनचुम्बी वृक्ष हैं। एक स्थान पर खाली मैदान है। वहाँ पर सफ़ेद धुआँ आसमान में फैल रहा था।''

''ओह, यह बात है ! हम लोग अंगरक्षक की मदद से वहाँ तक पहुँच सकते हैं। अब सब लोग रथ पर सवार हो जाइए।'' ये शब्द कहते देवशर्मा रथ की ओर बढ़ा।

''वैद्यदेव ! क्या रथ में सभी लोगों को स्थान मिलेगा? सिद्धसाधक और उसके वाहन का क्या होगा? क्या मकरकेतु अपने वाहन के साथ आसमान में उड़कर हमारा अनुसरण करेगा?'' जयशील ने पूछा।

देवशर्मा ने सब लोगों की तरफ़ एक बार दृष्टि

दौड़ाकर कहा, "जिन लोगों के पास वाहन हैं, वे लोग अपने-अपने वाहनों पर चले आवें ! क्यों सिद्धसाधक और मकरकेतु? ठीक है न?"

मकरकेतु ने सिद्धसाधक की ओर देखा। सिद्धसाधक दाँत पीसते हुए मकरकेतु की ओर तीक्ष्ण दृष्टि दौड़ाकर बोला, "हम लोग आपके साथ उसी वेग के साथ उस स्थान पर पहुँच सकते हैं, मगर रास्ते में अगर मकरकेतु ने मुझे धोखा देने की कोशिश की तो मैं इसे अपने नर वानर का आहार बना डालूँगा।"

"सिद्धसाधक ! नाराज़ मत होओ। इस वक़्त हम सब मित्र हैं।" मकरकेतु ने हँसने का व्यर्थ प्रयत्न करते हुए कहा।

"यह बात मैंने तुमसे कई बार सुनी है। जब तक राजा कनकाक्ष के बच्चे सुरक्षित हमें प्राप्त न होंगे, तब तक माया सरोवर के लोग हमारे दुश्मन ही होंगे।" सिद्धसाधक ने कहा।

इसके बाद सिद्धसाधक और मकरकेतु को छोड़ बाक़ी सब लोग हंसों के रथ पर सवार हुए। अंगरक्षक ने उन दोनों को मार्ग बताते हुए कहा, "एक ऊँचा पहाड़ और गगनचुम्बी महावृक्षों को याद रखो।" हंसों का रथ आसमान में उड़ा और देखते-देखते आँखों से ओझल हो गया। तब सिद्धसाधक नर वानर के कंधों पर बैठकर बोला, "मकरकेतु, अब चलो, विलंब न करो।"

मकरकेतु सर हिलाकर जलग्रह पर सवार हो गया। सिद्धसाधक के हाथ बन्दी बना जलवृक राक्षस गिड़गिड़ाकर बोला, "महान वीर ! मुझे आप अपने सेवक के रूप में अपने साथ ले चलिए। आज से मैं आपका सेवक हूँ।"

ये शब्द सुन सिद्धसाधक फूला न समाया और बोला, "अरे जलवृक राक्षस ! तुमने खूब

कहा। लेकिन क्या तुम मेरे नर वानर के साथ उसी गति से चल सकते हो?''

''मालिक ! मेरे पंख नहीं हैं, फिर भी मैं ज़मीन पर पक्षी जैसे वेग के साथ दौड़ सकता हूँ।'' जल राक्षस ने कहा।

''वाह रे सेवक ! तुमने लाख टके की बात कही।'' इन शब्दों के साथ सिद्धसाधक ने जल राक्षस का कंधा थपथपाया और नर वानर को हांकने को हुआ, तभी नाटी जाति का सेनापति अपने थोड़े से अनुचरों के साथ भेड़ों के वाहन पर वहाँ पर आ पहुँचा।

''अहो ! वीर नाटी जाति के सेनापति ! क्या खबर लाये हो?'' सिद्धसाधक ने पूछा।

नाटी जाति का सेनापति नदी के किनारे घायल हो छटपटानेवाले जलवृक राक्षसों की ओर संकेत करके बोला, ''सरकार ! यहाँ पर जो कुछ हुआ, उसे मैंने टीले की आड़ में खड़े होकर देखा। इन भेड़ियों के सिरवाले मानवों के साथ कैसा बर्ताव करूँ? बिना इनका इलाज कराये ऐसे ही मरने देना न्यायसंगत नहीं है न?''

''तुमने बड़ी अच्छी बात बताई। उन दुष्टों का इलाज कराकर ही उन्हें परलोक में भेज दो। मगर ख़बरदार ! थोड़ी ताक़त पाकर ये लोग शायद तुम लोगों को पकड़कर खा डालें।'' सिद्धसाधक ने सचेत किया।
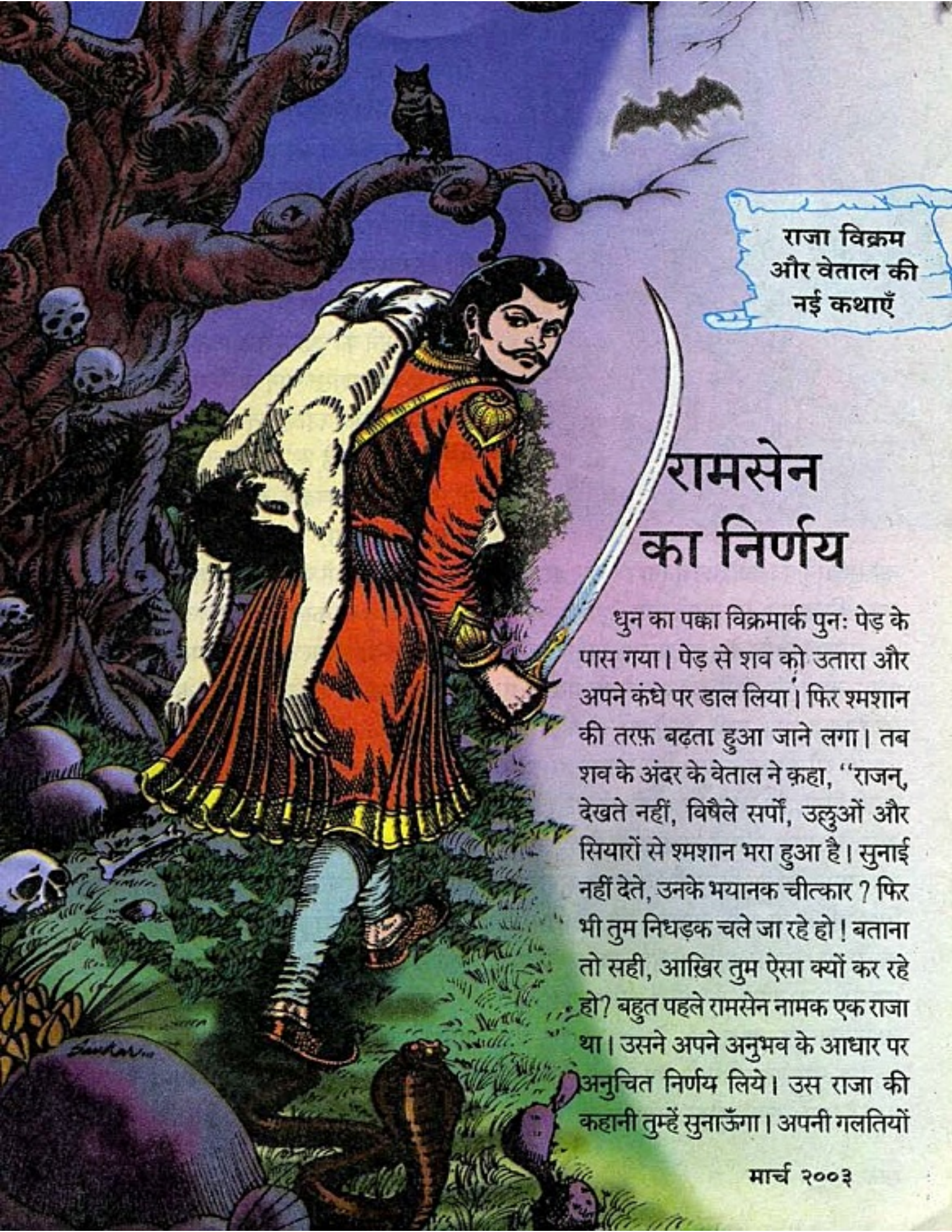
सिद्धसाधक की बात पूरी होने के पूर्व ही नाटी जाति का सेनापति नदी के उस पारवाले जंगल की ओर विस्मयपूर्ण दृष्टि दौड़ाकर बोला, ''मालिक ! उधर देखिये तो ! आसमान को छूनेवाला वह सफ़ेद धुआँ कैसा? जंगल जल तो नहीं रहा है न?''

''अबे, जंगल नहीं जल रहा है। उस धुएँ का कारण बननेवाले माया सरोवर नामक दुष्ट आदमी का शरीर जल रहा है। हे नर वानर, उस धुएँ की दिशा में वायु वेग के साथ दौड़ो।'' यों कहकर सिद्धसाधक ने नर वानर को हांक दिया।

नर वानर ने समस्त जंगल में गूंज जानेवाला एक गर्जन किया और तब चल पड़ा। उसके पीछे जलवृक राक्षस तथा जलग्रह पर सवार मकरकेतु भी चल पड़े। *(अभी शेष है)*

राजा विक्रम और वेताल की नई कथाएँ

रामसेन का निर्णय

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर श्मशान की तरफ़ बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, "राजन्, देखते नहीं, विषैले सर्पों, उल्लुओं और सियारों से श्मशान भरा हुआ है। सुनाई नहीं देते, उनके भयानक चीत्कार? फिर भी तुम निधड़क चले जा रहे हो! बताना तो सही, आखिर तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? बहुत पहले रामसेन नामक एक राजा था। उसने अपने अनुभव के आधार पर अनुचित निर्णय लिये। उस राजा की कहानी तुम्हें सुनाऊँगा। अपनी गलतियों

को सुधारने की कोशिश करना।'' फिर वह उस राजा की कहानी यों सुनाने लगा :

रामसेन प्रमोद देश का शासक था। वह सदा आम लोगों के कष्टों को जानने के प्रयत्न में लगा रहता था। उनके कष्टों को दूर करना ही अपना ध्येय मानता था। ऐसे कितने ही काम उसने किये, जिनसे आम लोगों को राहत मिले और वे अपना जीवन सुखपूर्वक बिता सकें। यह जानने के लिए कि उन्हें आवश्यक सहायता मिल रही है या नहीं, गुप्तचरों की भी नियुक्ति करता था। कभी-कभी तो वह खुद बहुरूपिया बनकर उन नगरों में जाया करता था और तहक़िकात करता था।

एक बार बहुरूपिये के वेष में वह भाग्यपुरी गया। वहाँ उसने हरेक नागरिक के मुँह से भाग्यपुरी के अधिकारी दिव्यदत्त की भरपूर प्रशंसा सुनी। उन्हें सुनते-सुनते वह थक गया और उसे इस बात का दुख हुआ कि लोग अपने राजा को भूलकर दिव्यदत्त की ही प्रशंसा किये जा रहे हैं। राजधानी लौटकर उसने कुछ गुप्तचरों को बुलवाया और उनसे कहा, ''लगता है, भाग्यपुरी के अधिकारी दिव्यदत्त को अपनी प्रशंसा सुनने की बड़ी बुरी आदत है। मुझे संदेह होता है कि प्रशंसा पाने के लिए वह राज धन का अपव्यय कर रहा है। तुम लोग पता लगाओ कि सचाई क्या है ?''

गुप्तचर एक हफ़्ते के अंदर ही लौटे और राजा से निवेदन किया, ''प्रभु, दिव्यदत्त प्रभु-भक्ति परायण है। जो भी काम वह करता है, वह आप ही का नाम लेकर करता है। वह जनता की भलाई के लिए सभी प्रकार की सहूलियतों का प्रबंध करता है। अपने इन उत्तम गुणों के कारण वह लोकप्रिय हुआ है। वह राज धन के एक पाई का भी दुरुपयोग नहीं करता।''

उनकी बातें सुनने के बाद भी रामसेन को विश्वास नहीं हुआ। उसे यह संदेह भी हुआ कि दिव्यदत्त ने गुप्तचरों को रिश्वत दी होगी। उसने ठान लिया कि स्वयं दिव्यदत्त की परीक्षा लूँ। वह बहुरूपिया बनकर भाग्यपुरी गया।

राजा वहाँ एक सराय में ठहरा। उस दिन शामको सराय के मालिक से राजा ने कहा, ''महोदय, मेरे पास दस हज़ार अशर्फ़ियाँ हैं। रात को नगर में घूमकर यहाँ की सुंदरता को देखने

की मेरी बड़ी तमन्ना है। क्या मैं अशर्फ़ियों की अपनी गठरी यहाँ छोड़ जाऊँ?''

''दिव्यदत्त इस नगर का अधिकारी है। यहाँ चोरों से डरने की कोई ज़रूरत नहीं। यहाँ चोरी होती ही नहीं। अपनी गठरी अपने कमरे में ही छोड़कर आप जा सकते हैं। आप चाहें तो मेरे सपुर्द भी कर सकते हैं या अपने पास रख सकते हैं,'' सराय के मालिक ने कहा।

रामसेन अशर्फ़ियों की गठरी अपने साथ लिये नगर में घूमने गया। नगर की गलियों में दीपों की कांति इस प्रकार झिलमिला रही थी मानों दिन हो। रामसेन ने देखा कि चंद वैद्य शालाएँ व रक्षा बल के घर खुले पड़े हैं। मन ही मन दिव्यदत्त की प्रशंसा किये बिना उससे रहा नहीं गया। पर सोचा, परीक्षा करने के लिए और बहुत बाक़ी है।

रामसेन गठरी को नगर की एक गली में एक जगह पर रख आगे बढ़ने लगा तो उसने कहीं से आवाज़ सुनी, ''ठहरो !''

रामसेन चकित होता हुआ रुक गया। तब एक सैनिक आकर पूछने लगा, ''इस गठरी को यहीं छोड़कर तुम क्यों जा रहे हो? इसमें कहीं कोई विषैला पदार्थ तो नहीं है?''

''तुम कौन होते हो, मुझसे पूछनेवाले? मैं जो चाहता हूँ, करूँगा। नाराज़ी का नाटक करते हुए रामसेन ने कहा।

''देखो, मैं सैनिक हूँ। छिपकर देखता हूँ कि कोई अनर्थ तो नहीं हो रहा है। आफ़तों से लोगों को बचाना मेरा फ़र्ज़ है।'' सैनिक ने कहा।

जान-बूझकर रामसेन भागने लगा। वह बहुत तेज़ी से दौड़ने लगा ताकि सैनिक उसे पकड़ न सके। सैनिक भी उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगा। एक जगह पर राजा का पैर फिसल गया। नीचे गिर जाने से उसके सिर में चोट लग गई। वह बेहोश हो गया।

सैनिक ने ज़ोर से सीटी बजायी। फिर चारों कोनों से कुछ सैनिक आये। और रामसेन को वैद्यशाला ले गये।

राजा की जाँच करने के बाद वैद्य ने कहा, ''घाव गहरा है,'' फिर उसने राजा की चिकित्सा की और घाव पर पट्टी बाँध दी।

होश में आने के बाद रामसेन ने कहा, ''हर मामूली नागरिक की भी प्राण-रक्षा की सुविधा इस नगर में है और यह बहुत बड़ी बात है। जिस

दिव्यदत्त ने ऐसे उत्तम प्रबंध किये, उसके दर्शन किये बिना मेरे मन को शांति नहीं मिलेगी।''

सैनिकों द्वारा जब यह बात दिव्यदत्त को मालूम हुई तब वह रामसेन से मिलने आया। उसने उससे पूछा कि अशर्फ़ियों की गठरी गली में ही छोड़कर जाने के पीछे उसका क्या उद्देश्य है। तब राजा ने कहा, ''मैं महाराज रामसेन हूँ। इस नगर में तुम्हारे प्रशासन को देखने खुद चला आया। प्रजा के क्षेम के लिए तुम जो काम कर रहे हो, उसके लिए मैं तुम्हें बधाई देता हूँ।''

दिव्यदत्त ने तुरंत घुटने टेककर कहा, ''प्रभु, अच्छा हुआ, आप बाल-बाल बच गये। मेरी परीक्षा के प्रयत्न में आपने अपने आपको जोखिम में डाल लिया।''

रामसेन ने राजधानी लौटने के बाद दिव्यदत्त का बड़ा आदर-सत्कार किया। यह देखते हुए राज्य के अन्य नगरों के अधिकारियों ने भी अपने-अपने नगरों को उसी प्रकार सजाने-संवारने का और राजा से सम्मान पाने का निर्णय लिया। परंतु सौभाग्यपुर का अधिकारी भव्यवर्मा यह सम्मान जल्दी पाना चाहता था।

भव्यवर्मा ने महारानी से मिलकर कहा, ''मेरे नगर की जनता सुखी है। उन्हें सभी प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हैं। परंतु दुख की बात तो यह है कि जो आदर दिव्यदत्त को मिला, वह मुझे प्राप्त नहीं हुआ। आप महाराज को सुझाइये कि वे एक बार मेरे नगर का संदर्शन करें। वे खुद जान जायेंगे कि मैं कितना योग्य और समर्थ हूँ।''

रानी ने यह विषय राजा को बताया। तब राजा ने कहा, ''ठीक है, मैं एक हफ़्ते के अंदर

अवश्य उस नगर में जाऊँगा। पहले से ही सूचित करके जाऊँगा तो वह सावधान हो जायेगा और आवश्यक इंतज़ाम कर लेगा। इसलिए यह बात राज ही रहे।''

एक हफ़्ते के बाद राजा ने एक सेवक को बहुरूपिया बनाकर सौभाग्यपुर भेजा। फिर वह खुद एक नागरिक के वेष में उस बहुरूपिये के पीछे-पीछे गया। उस सेवक बहुरूपिये को ही भव्यवर्मा ने महाराज समझ लिया और उसका ख़ास आदर-सत्कार किया।

वह बहुरूपिया रात को नगर में घूमते हुए अशर्फ़ियोंकी गठरी छोड़ गया तो सैनिकों ने उसे बेहोश कर वैद्यशाला में दाखिल कर दिया।

इतने में नागरिक वेषधारी राजा रामसेन भी विष ज्वर के बहाने वैद्यशाला गया तो वहाँ किसी ने भी उसकी ख़बर नहीं ली। सब लोग उस परदेशी बहुरूपिये के सम्मान में ही लगे हुए थे। एक सैनिक धीरे से रामसेन से कहने लगा, ''नगर की वैद्यशालाओं में योग्य व समर्थ चिकित्सक नहीं हैं। मासिक वेतन भी यहाँ ठीक तरह से दिये नहीं जाते, इसलिए सबके सब भाग्यपुरी चले गये। प्रज्ञावान व सक्षम वैद्यों की सेवाएँ केवल भव्यवर्मा को ही मिलती हैं। तुम्हें अपने प्राण से प्यार है, तो तुरंत भाग्यपुरी जाओ।''

रामसेन राजधानी लौटा और रानी को पूरा विषय बताते हुए कहा, ''अब तुम्हें भी मालूम हुआ होगा कि भव्यवर्मा नगर के प्रशासन के योग्य नहीं है। वह तुम्हारा रिश्तेदार ठहरा, इसलिए तुमने मेरे आगमन की बात पहले से ही उसे बता दी होगी।''

रानी चकित रह गयी और बोली, ''भला मैं ऐसा क्यों करूँगी। जब आपने इसके बारे में मुझसे बताया तब मेरी दासियों में से किसी ने भव्यवर्मा को यह समाचार पहुँचाया होगा। मैं पूछताछ करूँगी और उस दासी को कड़ी से कड़ी सज़ा दूँगी।''

रामसेन ने इस पर अपनी आपत्ति जताते हुए कहा, ''देवी, यह काम मत करना। भव्यवर्मा तुम्हारा रिश्तेदार है, इसलिए तुम्हारी प्रशंसा पाने के उद्देश्य से किसी दासी ने यह काम किया होगा।''

इस घटना के एक हफ़्ते के अंदर ही रामसेन ने भाग्यपुरी के अधिकारी दिव्यदत्त को सौभाग्यपुर

का अधिकारी नियुक्त किया और सौभाग्यपुर के अधिकारी भव्यवर्मा को भाग्यपुरी का अधिकारी नियुक्त किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद कहा, "राजन्, रामसेन ने जो नियुक्तियाँ कीं, उनसे क्या यह स्पष्ट मालूम नहीं हो जाता कि वह भव्यवर्मा और दिव्यदत्त के शक्ति-सामर्थ्यों का सही मूल्यांकन नहीं कर सका? प्रशासन दक्ष व लोकप्रिय दिव्यदत्त को सौभाग्यपुर का अधिकारी बनाना और जनता के कल्याण की ओर ध्यान न देनेवाले विलासी भव्यवर्मा को भाग्यपुरी का अधिकारी बनाना क्या रामसेन के अनुचित व अविवेकपूर्ण निर्णय नहीं हैं? मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।"

विक्रमार्क ने तब कहा, "राजा रामसेन ने प्रधानतया भाग्यपुर और सौभाग्यपुरी की प्रजा को दृष्टि में रखते हुए यह निर्णय लिया था। लंबे अर्से से दिव्यदत्त के प्रशासन-काल में भाग्यपुरी की जनता सब प्रकार के सुखों को भोगती आ रही थी। वे अभी-अभी नियुक्त भव्यवर्मा के विलासपूर्ण जीवन को और प्रजा और उनकी समस्याओं के प्रति उसकी लापरवाही को अधिक समय तक सह नहीं पायेंगे। अपनी दुस्थिति के बारे में अवश्य वे राजा की शिकायत करेंगे। तब भव्यवर्मा को उस पद से हटाने में कोई दिक्कत नहीं होगी। उस स्थिति में रानी भी राजा के निर्णय से सहमत होगी। अब रही सौभाग्यपुरी की बात। नया अधिकारी नियुक्त दिव्यदत्त जनता के कल्याण के लिए भरसक कोशिश करेगा और सौभाग्यपुर को भी भाग्यपुरी के समान वैभवशाली बनायेगा। इस प्रकार वहाँ की प्रजा को भी दिव्यदत्त की क्षमता और सत्यनिष्ठा का लाभ मिल जायेगा। यह सब कुछ सोचकर ही राजा रामसेन ने यह निर्णय लिया। इसलिए उसके निर्णय को अनुचित व अविवेकपूर्ण कहना संगत नहीं।"

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

(आधार सुभद्रा की रचना)

बालों की बलि

कभी तिरुपति गये हो? यह मंदिर-नगर एक विचित्र दृश्य प्रस्तुत करता है। तिरुपति में असाधारण संख्या में पाये जानेवाले मुण्डित सिरवाले लोग नये आगन्तुकों को चकित कर सकते हैं। लेकिन थोड़ी-सी जाँच-पड़ताल से तुम्हें पता चल जायेगा कि ये गंजे नर-नारी और बच्चे भक्त हैं जो पूरे आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडु के अनेक भागों से आकर यहाँ तिरुपति-तिरुमाला के वेंकटेश्वर भगवान को आहुति के रूप में अपने सिर का मुण्डन करवाते हैं। तमिलनाडु की कई जातियों में प्रत्येक नवजात शिशु को एक वर्ष की आयु होने से पहले तिरुपति या किसी अन्य मंदिर में मुण्डन के लिए लाया जाता है। अब किसी देवता को किसी के सिर का बाल क्यों लेना चाहिए? भक्तों का विश्वास है कि बलिदान की भावना वास्तविक बलिदान से अधिक महत्व रखती है१ केश सदा-सर्वदा से प्रत्येक नर-नारी और बालक के लिए गर्व करने की वस्तु रहा है - और उसे भगवान को समर्पित कर देना सचमुच बलिदान है।

काली मिर्च, काली को

गुलाब, चमेली, गेन्दा,, जवाकुसुम - केवल ये ही ऐसे फूल नहीं हैं जिन्हें अपने इष्टदेव को अर्पित कर सकते हैं, कालीमिर्च भी कर सकते हैं। जी हाँ, काली मिर्च! उत्तर केरल कोडुंगलुर शहर में भद्रकाली या दुर्गा का एक मंदिर है, जहाँ भक्तगण देवी को अन्य वस्तुओं के साथ काली मिर्च निवेदित करते हैं। काली का अर्थ है काला रंग, जो काली मिर्च का रंग है। विश्वास किया जाता है कि देवी चेचक के आक्रमण से रक्षा करती है जो बहुत वर्षों तक काला दाग छोड़ जाता है।

भारत की पौराणिक कथाएँ – ११

जब बकरा हँस पड़ा और रोया

एक धर्मनिष्ठ गृहस्थ जीवन में सफलता के लिए अथवा श्रद्धावश यज्ञ करना चाहता था। उस यज्ञ में बलि के लिए एक बकरे की आवश्यकता थी।

वह गृहस्थ अध्यापक था। उसने अपने दो विद्यार्थियों को एक जमींदार से, जो इसका भूतपूर्व छात्र था, एक बकरा माँगकर लाने के लिए कहा। वे दोनों एक हृष्ट-पुष्ट बकरे के साथ लौटे।

दूसरे दिन सबेरे से ही यज्ञ की तैयारी होने लगी।

"बच्चो ! पहाड़ी के नीचे झील में ले जाकर उसे अच्छी तरह स्नान कराओ। तत्पश्चात उसे एक माला से सजाकर उसके ललाट पर तिलक लगा दो। फिर यहाँ ले आओ।" अध्यापक ने छात्रों को निर्देश दिया और स्वयं यज्ञ के लिए दूसरी व्यवस्था में लगा रहा।

दोनों छात्रों ने बकरे को झील पर ले जाकर स्नान कराया। तब तक दो अन्य छात्रों ने आकर जंगल से फूल तोड़े और माला बनाई। जैसे ही छात्रों ने बकरे को माला पहनाई, कुछ अनोखा घटा : बकरा हँस पड़ा।

क्या बकरे को हँसते हुए किसी ने सुना है? विद्यार्थी डर गये। बकरे ने आँखें फाड़कर उन्हें देखा। लगता है उनकी परेशानी देख उसे मजा आ रहा था।

जब छात्र किंकर्तव्यविमूढ़ हो एक दूसरे को खड़े-खड़े देख ही रहे थे कि फिर कुछ अनोखी घटना हुई। इस बार बकरा रोने लगा।

एक छात्र ने जाकर अध्यापक को इस बेतुकी घटना के बारे में बताया। ''किसी अलौकिक शक्ति ने उसे वश में कर लिया होगा।'' अध्यापक ने बताया। ''क्या दुष्टात्मा-ग्रस्त पशु की बलि देना उचित होगा?'' उसने सोचा। वह छात्र के साथ घटनास्थल पर गया।

बकरे ने अध्यापक की आँखों में घूरकर देखा। उसकी आँखें कुछ कहना चाहती थीं। दूसरे ही क्षण कुछ अत्यधिक अप्रत्याशित घट गई। ''तुमने ठीक ही अनुमान लगाया।'' बकरे ने अलौकिक स्वर में कहा। ''मैं तुम्हारी ही तरह एक गृहस्थ की आत्मा हूँ। मैंने इस बकरे को ग्रस्त कर लिया है। मैंने पहली बार ऐसा नहीं किया है। मैं ४९९ बार ऐसा कर चुका हूँ। मैंने ४९९ बकरों को ग्रस्त किया जिनकी तुम्हारे जैसे धर्मनिष्ठ व्यक्तियों ने बलि चढ़ाई। जानते हो मुझे इतनी बार क्यों बकरा बनना पड़ा?'' बकरे ने पूछा।

''नहीं,'' अध्यापक ने भय से काँपते हुए कहा। ''मुझे नहीं मालूम तुम कौन हो?''

''ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मैंने एक समृद्ध गृहस्थ के रूप में एक धार्मिक अनुष्ठान के लिए एक बकरे की बलि चढ़ाई जैसा कि तुम करने जा रहे हो। उस कर्म के कारण मेरी यह दुर्गति हुई। मुझे पाँच सौ बार बलि की पीड़ा को अनुभव करने का दण्ड मिला। यह मेरी आखिरी बारी है। इसीलिए मैं हँस पड़ा - मुक्ति की हँसी।'' बकरे ने समझाया।
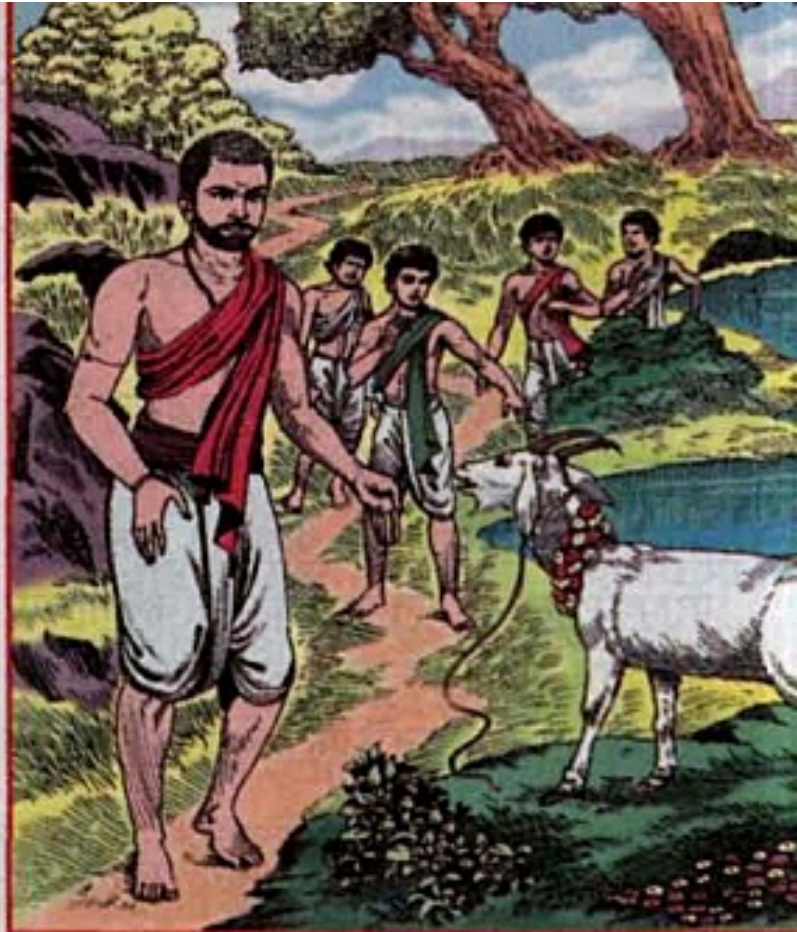
तब तक अध्यापक अपने आपको संभाल चुका था। ''मैं समझ गया कि तुम क्यों हँसे। किन्तु तुम्हारे रोने का कारण क्या है?'' उसने पूछा।

''क्या इसका कारण जानना तुम्हारे लिए आवश्यक है? तो सुनो! मैं तुम्हारे भाग्य पर रोया। तुम्हें भी मृत्यु के पश्चात पाँच सौ बार इस अग्नि परीक्षा से गुजरना होगा। क्या समझ में आई बात? ठीक है। अब यहाँ विलम्ब न करो। हम सब अनुष्ठान स्थल पर चलें। जल्दी से अपनी कुंल्हाड़ी मेरी गर्दन पर चलाओ। मैं अपने पाप से मुक्ति की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।'' बकरे ने कहा।

किन्तु अध्यापक ने बकरे की बलि देने का विचार त्याग दिया था। ''तुम जंगल में घूमने के

लिए स्वतंत्र हो। मैं तुम्हारे प्राण नहीं लेना चाहता।'' बकरे से उसने कहा।

''ओह नहीं !'' बकरा चिल्लाकर बोला। ''कृपया मुझे मार दो। जैसे ही बकरा, जिसमें मैं निवास कर रहा हूँ, मरेगा, मैं मुक्त हो जाऊँगा। मैं मनुष्य में जन्म लेकर बकरे की बलि देने के बदले कुछ अच्छे कर्म करूँगा। पुण्य और परोपकार करूँगा, भगवान की भक्ति करूँगा और यथाशीघ्र मुक्ति प्राप्त करने का प्रयास करूँगा। इसलिए तुमसे निवेदन है कि अब अधिक विलम्ब न करो।''

''नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता।'' अध्यापक ने जोर देकर कहा।

''लेकिन आज मेरी मुक्ति निर्दिष्ट है। यदि तुम नहीं मारोगे तो शायद किसी बाघ द्वारा मेरी मृत्यु हो।'' बकरे ने कहा।

तभी एक तूफान का समां बँधने लगा और अचानक झील के किनारे के वृक्ष आँधी से हिलने लगे। देखते-देखते आसमान काले बादलों से भर गया, बिजलियाँ चमकने लगीं और प्रलय का-सा दृश्य उपस्थित हो गया। कुछ वृक्षों के टूटकर गिर जाने से भयंकर आवाज हुई। अध्यापक और छात्रों ने भागकर एक गुफा में शरण ली। अचानक बादलों की गरज के साथ फिर बिजली कड़की और वज्रपात के साथ ही बकरा ढेर हो गया।

तूफान के पश्चात जब वे ग्राम की ओर लौट रहे थे, विद्यार्थियों ने पूछा, ''क्या दूसरा बकरा ले आयें?''

''हरगिज नहीं बच्चो ! मैं बकरे की बलि नहीं दूँगा। उसके बिना भी यज्ञ हो सकता है।'' अध्यापक ने कहा।

अध्यापक में ज्ञानोदय हो गया। उसके अन्दर से आवाज आई अथवा उसे ऐसा लगा कि उसके अन्दर कोई कह रहा है कि अपनी पाशविक वृति को मारना ही सच्चा यज्ञ है।

चिविंग गम की वापसी !

दो वर्ष पूर्व सिंगापुर ने कानून बनाकर उस द्वीप-राष्ट्र में चिविंग गम की बिक्री और इस्तेमाल पर रोक लगा दी थी। अब वह निषेध हटा लिया गया है - यद्यपि पूर्ण रूप से नहीं।

औषधीय लाभों के लिए डाक्टरों और दंत चिकित्सकों द्वारा अनुमोदित तथा दवा की दुकानों से उपलब्ध चीनी रहित गम अब प्रयुक्त किया जा सकता है। कुछ लोगों का विश्वास है कि चिविंग गम अभी भी मुँह का जायका खराब कर देगा।

पत्रों का कीर्तिमान

समाचार पत्रों में सर्वत्र 'सम्पादक के नाम पत्र' नाम का एक नियमित कॉलम रहता है। निस्सन्देह ये पत्र पाठकों द्वारा भेजे जाते हैं, लेकिन विषय भिन्न-भिन्न होता है। यह समाचार पत्र में प्रकाशित किसी अंश पर टिप्पणी हो सकता है, यह अच्छा-बुरा उसका अपना अनुभव हो सकता है जो वह दूसरों को बताना चाहता है। यह लोगों या संस्थाओं या उनके द्वारा दी गई सेवाओं की त्रुटियों के विषय में शिकायत हो सकता है। कुछ समाचार पत्रों में ''व्यथा कॉलम'' (ऐगॉनि कॉलम) होता है, जिनमें ऐसी शिकायतों को प्रचारित किया जाता है ताके उपचार की क्रिया निमंत्रित की जा सके। दिल्ली के थोक कपड़ा व्यापारी सुभाष अग्रवाल का नाम अभी-अभी भिन्न-भिन्न समाचार पत्रों में १२०० से अधिक पत्रों के प्रकाशन के लिए गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्ड्स में दर्ज किया गया है।

सोने का अंडा

पंडरीपुर गाँव में धनिया नामक एक किसान था। गोपाल और गोविंद नामक उसके दो बेटे थे। उसने दोनों बेटों की शादी कर दी। धनिया का घर बड़ा और विशाल था, इसलिए सब उसी में मिल-जुलकर रहते थे।

धनिया के पास चार एकड़ जमीन थी। वह बूढ़ा हो चुका था, इसलिए उसने खेती-बाड़ी का काम अपने बेटोंके सुपुर्द कर दिया। गोपाल सबेरे उठकर खेती के काम में लग जाता था। परंतु गोविंद देर से जागता था।

गोविंद की पत्नी राधा को अपने पति की ऐसी आदत से नफ़रत थी। वह उससे कहती रहती, ''जब देखो, हवाई क़िले बनाते रहते हो। खेती में अपने भाई की मदद क्यों नहीं करते?''

गोविंद पर अपनी पत्नी की बातों का कोई असर नहीं होता था। वह निस्संकोच कहता, ''फिक्र क्यों करती हो? किसी दिन सोने के अंडे देनेवाली बतख मेरे हाथ आ जायेगी और मेहनत किये बिना ही मैं लखपति बन जाऊँगा।''

गोपाल और उसकी पत्नी बड़े ही अच्छे स्वभाव के थे, इसलिए गोविंद या उसकी बातों पर विशेष ध्यान नहीं देते थे।

यों दिन गुज़रते गये। एक दिन रात को एक अपरिचित जवान गोविंद के घर आया। खाट पर लेटे गोविंद ने उठकर उससे पूछा, ''तुम कौन हो? किससे मिलना है?''

''मेरा नाम हरि है। पास ही के गाँव में रहता हूँ। एक ज़रूरी काम पर दूसरा गाँव जाने के लिए निकला हूँ। अंधेरा छा गया। अब वहाँ पहुँचना संभव नहीं है। कृपया यहीं यह रात गुज़ारने की अनुमति दीजिए। सबेरे ही निकल ज़ाऊँगा,'' हरि ने विनम्र स्वर में कहा।

''ठीक है। इस बरामदे में खाट का इंतज़ाम कर देता हूँ। खाना खा लेना और सो जाना,''

- द्वारकानाथ -

गोविंद ने यों कहा और इनका इंतज़ाम भी किया।

भोजन कर चुकने के बाद जब बरामदे में गोविंद खाट लगा रहा था तब उसने देखा कि हरि के हाथ में सोने के रंग की एक मुर्गी है। इसपर उसने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा, ''यह क्या? यह मुर्गी तो सोने की तरह चमक रही है।''

हरि ने हँसते हुए कहा, ''यह मुर्गी तो सचमुच सोने की है। सोने के अंडे देती है।''

''क्या कह रहे हो? क्या कहीं मुर्गी सोने के अंडे देती है?''गोविंद ने कहा।

हरि ने तुरंत अपने कंधे से लटकती हुई झोली में से एक अंडा निकाला और कहा, ''देखो, यह इस मुर्गी का दिया हुआ सोने का अंडा है। महीने में एक बार यह ऐसा अंडा देती है।''

''सचमुच क्या यह मुर्गी तुम्हारी ही है? इसे लेकर तुम कहाँ जा रहे हो?'' गोविंद आँखें फाड़-फाड़कर उसे देखते हुए प्रश्न पर प्रश्न करने लगा।

''एक मांत्रिक ने मुझे यह मुर्गी दी। पर इसे खिलाने की शक्ति मुझमें नहीं है, इसलिए पड़ोस के गाँव में रहनेवाले अपने एक रिश्तेदार को बेचने जा रहा हूँ।'' दीनता-भरे स्वर में हरि ने कहा।

गोविंद ने बड़ी ही मासूमियत-भरे स्वर में पूछा, ''इस मुर्गी को तुम भरपेट खिला नहीं पा रहे हो? क्या यह वज्र या रत्न खाती है?''

हरि ने क्षण भर रुककर कहा, ''ऐसी कोई बात नहीं। इस मुर्गी में एक विचित्र लक्षण है। ऐसे तो यह मामूली अंडे ही देती है, पर अपने मालिक की फ़सल के अनाज खाने पर महीने में एक बार सोने का अंडा देती है। उस अनाज को खाते-खाते अंडा सोने का बन जाता है। मैं तो गरीब हूँ और मेरा अपना खेत भी नहीं।''

गोविंद को लगा कि किसी भी हालत में उस मुर्गी को अपना बना लूँ। वह हरि के दोनों हाथ पकड़कर गिड़गिड़ाने लगा, ''देखो दोस्त ! मेरे

और मेरे भाई के पास चार एकड़ का खेत है। मेरे हिस्से में दो एकड़ मुझे मिलेंगे। उस खेत में फ़सल उगाऊँगा और उससे जो अनाज मिलेगा, उसे इस मुर्गी को भरपेट खिलाऊँगा। यह मुर्गी मुझे बेच दो।''

हरि दुविधा में पड़ गया। फिर उसने कहा, ''ठीक है, अब इस मुर्गी के लिए रक़म चुकाने की ज़रूरत नहीं है। मेहनत करके जो फ़सल उगाओगे, उसमें से बस, एक बोरा अनाज मेरे लिए रख देना। छः महीनों के बाद फिर मैं आऊँगा। बोरे भर का वह अनाज मुझे दे देना। यही काफ़ी है।''

गोविंद ने बेहद खुश होते हुए कहा, ''भगवान को गवाह बनाकर कसम खाता हूँ कि मैं अपना वचन निभाऊँगा।'' कहते हुए उसने मुर्गी अपने हाथ में ले ली। दूसरे दिन सबेरा होते ही हरि चला गया। गोविंद अपने बड़े भाई गोपाल से मिला और हठ किया कि खेत का आधा हिस्सा उसे दे दिया जाए। उसने कहा कि वह खुद खेती करेगा और उसकी सहायता पर निर्भर रहने की उसकी इच्छा नहीं है। पहले तो गोविंद के बर्ताव पर वह चकित रह गया, पर उसने आख़िर ''हाँ'' कर दिया।

तब से गोविंद सबेरे ही उठ जाता और खेत चला जाता। दिन भर काम पर लगा रहता। अब वह उस दिन का इंतज़ार करने लगा, जिस दिन अनाज उसके हाथ आनेवाला है।

कई महीने गुज़र गये। फसल अच्छी हुई और आख़िर वह शुभ घड़ी आ ही गयी, जब वह बोरों में भरा अनाज घर ले आया।

अब उसका पूरा घर अनाज के बोरों से भरा हुआ था। यह देखकर उसकी पत्नी की खुशी का ठिकाना न रहा। किसी की भी मदद लिये बिना गोविंद ने यह सफलता प्राप्त की, इसपर गाँव के सब लोग उसकी वाहवाही करने लगे।

गोविंद ने बड़े प्यार से अपनी मुर्गी पर उँगलियाँ फेरीं और अनाज के दाने उसे खिलाने लगा। वह बड़े चाव से उन दानों को खाने लगी।

यों एक महीना बीत गया। बड़ी बेचैनी से गोविंद यह देख रहा था कि कब उसकी मुर्गी सोने का अंडा देगी। कितना भी वह खिलाता, वह सोने का अंडा नहीं दे रही थी। उसने सोचा कि शायद उन अंडों का रंग सोने के रंग में बदल

जाए, पर ऐसा भी नहीं हुआ। वह निराश हो गया। हरि पर उसमें क्रोध उमड़ आया। उसने निश्चय कर लिया कि उस धोखेबाज़ हरि को सबक़ सिखाकर ही रहूँगा। वह उसके आने की प्रतीक्षा करने लगा।

एक दिन हरि उसके घर आ पहुँचा और बड़े प्यार से गोविंद से पूछा, ''कैसे हो? सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है न?'' पर गोविंद ने क्रोध-भरे स्वर में उससे कहा, ''तुमने मुझे बिलकुल धोखा दिया। तुम्हारी मुर्गी को सोने का अंडा देना नहीं आता।''

इस पर हरि ज़ोर से हँस पड़ा और गोविंद के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, ''देखो, मैंने तुम्हें धोखा नहीं दिया। वह मेरी मुर्गी नहीं, तुम्हारी है। इसने तो सोने का अंडा दिया है। सोना उसके अंडे में न हो, परंतु उस फसल में है, जिसे तुमने मेहनत करके अकेले ही उगायी। अब तुम्हारे घर में अनाज के जो बोरे हैं, वे क्या सोने के बराबर नहीं हैं?'' गंभीर स्वर में उसने पूछा।

गोविंद की समझ में नहीं आया कि इस सवाल का क्या जवाब दूँ? वह थोड़ी देर तक निश्चेष्ट रह गया। फिर अपने को संभालते हुए उसने कहा, ''हाँ हरि, तुमने सच कहा। अब मेरे घर में सोने का अंडा देनेवाली मुर्गी सचमुच ही है। पर, मेरा एक शक है। तुमने सुस्ती व दिवा-स्वप्न के पिशाच से मुझे मुक्त कर दिया। कहीं तुम मेरे दूर के रिश्तेदार तो नहीं हो न?''

''नहीं, मैं तुम्हारा कोई रिश्तेदार नहीं हूँ। पास ही के गाँव का हूँ। हाल ही में वहाँ की पाठशाला का अध्यापक बना। इस गाँव से आते-जाते लोगों से मैंने तुम्हारे बारे में सुना। सुना कि सोने का अंडा देनेवाली बतख को लेकर तुम सपने देखा करते हो। मुझे यह बात बड़ी अजीब लगी। सोने का अंडा देनेवाली बतख हो या मुर्गी, इससे क्या फ़र्क पड़ता है, इसलिए मैं मुर्गी ले आया।'' हरि ने हँसते हुए कहा।

वृक्ष पर देवी

पारिजात कल्पवृक्ष देवलोक में है। जो माँगो, वह वृक्ष देता है। अप्सरा सुनंदा चाहती थी कि वह देवेंद्र की पत्नी बने। अपनी इच्छा पूरी करने के लिए वह कल्पवृक्ष के नीचे बैठ गई। उसने पूरी कोशिश की, पर उसे अपनी इच्छा की याद नहीं आयी। जैसे ही वह वृक्ष से दूर गई, उसे उसकी इच्छा याद आ गयी। ऐसा एक बार नहीं, अनेक बार हुआ। एक बार वह पारिजात वृक्ष के नीचे जाकर कहने लगी, ''पारिजात वृक्ष ! मैं तुम्हारे नीचे आते ही अपनी इच्छा भूल जाती हूँ। वर दो कि मैं अपनी इच्छा का स्मरण कर सकूँ।''

''यह संभव नहीं होगा, क्योंकि वर देना देवताओं का काम है। जो माँगा जाता है, उसे देना मात्र ही मेरा काम है।'' पारिजात बोला।

''पर मैं क्या करूँ? जैसे ही मैं तुम्हारे नीचे आ जाती हूँ, अपनी इच्छा भूल जाती हूँ। मेरी इच्छा की पूर्ति का मार्ग क्या है?'' सुनंदा ने पूछा।

''तुम्हारी क्या इच्छा है, मैं जानती हूँ। परंतु वह उचित इच्छा नहीं है। इसीलिए मैं तुम्हें उस इच्छा की याद आने नहीं देती हूँ। तुम एक पतिव्रता स्त्री के पति की पत्नी बनना चाहती हो। तुम्हारी यह इच्छा सर्वथा अनुचित है। चाहो तो कुछ और माँगो। मैं अवश्य तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा।'' पारिजात ने कहा।

पारिजात की ये कड़ुवी बातें सुनकर सुनंदा नाराज़ हो उठी और कहने लगी, ''तुम भी कैसे वृक्ष हो! इच्छाओं को भुला देनेवाले तुम जैसे वृक्ष की परवाह मैं क्यों करूँ।'' कहती हुई उसने वृक्ष की चार टहनियाँ तोड डालीं।

पारिजात भी क्रोधित हो उठा और बोला,

- वसुधा -

"तुमने मेरी टहनियाँ तोड़ डालीं। इसलिए मैं तुम्हें शाप देता हूँ। आगे से तुम्हारा निवास-स्थल पृथ्वी होगा। वहाँ तुम ऐसे पेड़ के आश्रय में रहोगी, जिसकी टहनियाँ टूट चुकी हों। देवलोक में तुम्हारे लिए स्थान नहीं। इसी क्षण भूलोक चली जाओ।"

सुनंदा घबरा गयी और गिड़गिड़ाने लगी, "मेरी इच्छा को भुलाने में तो तुम्हारा हाथ था, पर मेरे क्रोध को नियंत्रित रखने में मेरी मदद नहीं की। अगर ऐसा करते तो मैं क्यों टहनियाँ तोड़ती? मेरी गलती में तुम्हारा भी हाथ है। अतः केवल मुझे ही दंड देना न्यायसंगत नहीं।"

"भगवान ने दूसरों की इच्छाओं पर नियंत्रण रखने की शक्ति मुझे दी। परंतु उन्होंने तुम्हारे क्रोध को नियंत्रित करने की शक्ति मुझे प्रदान नहीं की। तुम्हारे क्रोध के कारण मेरी चार टहनियाँ टूट गयीं।

"टहनियों के टूटने से पेड़ को कितनी पीड़ा पहुँचती है, तुम नहीं जानती। मुझे जो सज़ा भुगतनी है, भुगत लिया। अब तुम्हें अपनी सज़ा भुगतनी होगी। तुम भूलोक चली जाओ और उस पेड़ के आश्रय में रहो, जिसकी टहनियाँ टूट चुकी हैं। तुम्हें इसका अनुभव हो, इसीलिए मैंने तुम्हें ऐसा शाप दिया।" पारिजात ने कहा।

सुनंदा समझ गयी कि शाप से मुक्त होने की संभावना नहीं है तो उसने पारिजात से बिनती की, "ऐसा वर दो, जिससे भूलोक में रहते हुए भी मैं अपनी शक्तियों से वंचित न रहूँ।"

"भूलोक में जाने पर भी तुम्हारी शक्तियों का

नाश नहीं होगा। पर वे परोपकार के लिए ही काम में आयेंगी।" पारिजात ने कहा।

सुंनदा दूसरे ही क्षण भूलोक में उतरी। एक घर के पिछवाड़े का एक पेड़ अब उसका निवासस्थल था। सुनंदा पेड़ पर बैठी ही थी कि इतने में उस घर का मालिक कोदंडराम वहाँ आया और किसी काम के लिए उसने पेड़ की एक शाखा तोड़ डाली। सुनंदा को लगा, मानों कोई उसका हाथ तोड़ रहा हो। वह दर्द के मारे कराह उठी।

कोदंडराम घबरा गया और निश्चेष्ट होकर पेड़ की तरफ़ एकटक देखने लगा। "मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा? अकारण ही तुमने मेरी शाखा क्यों तोड़ दी?" सुनंदा गरज उठी।

कोदंडराम को देवी दिखायी नहीं पड़ी। उसने सोचा कि पेड़ ही स्वयं उससे बात कर रहा है।
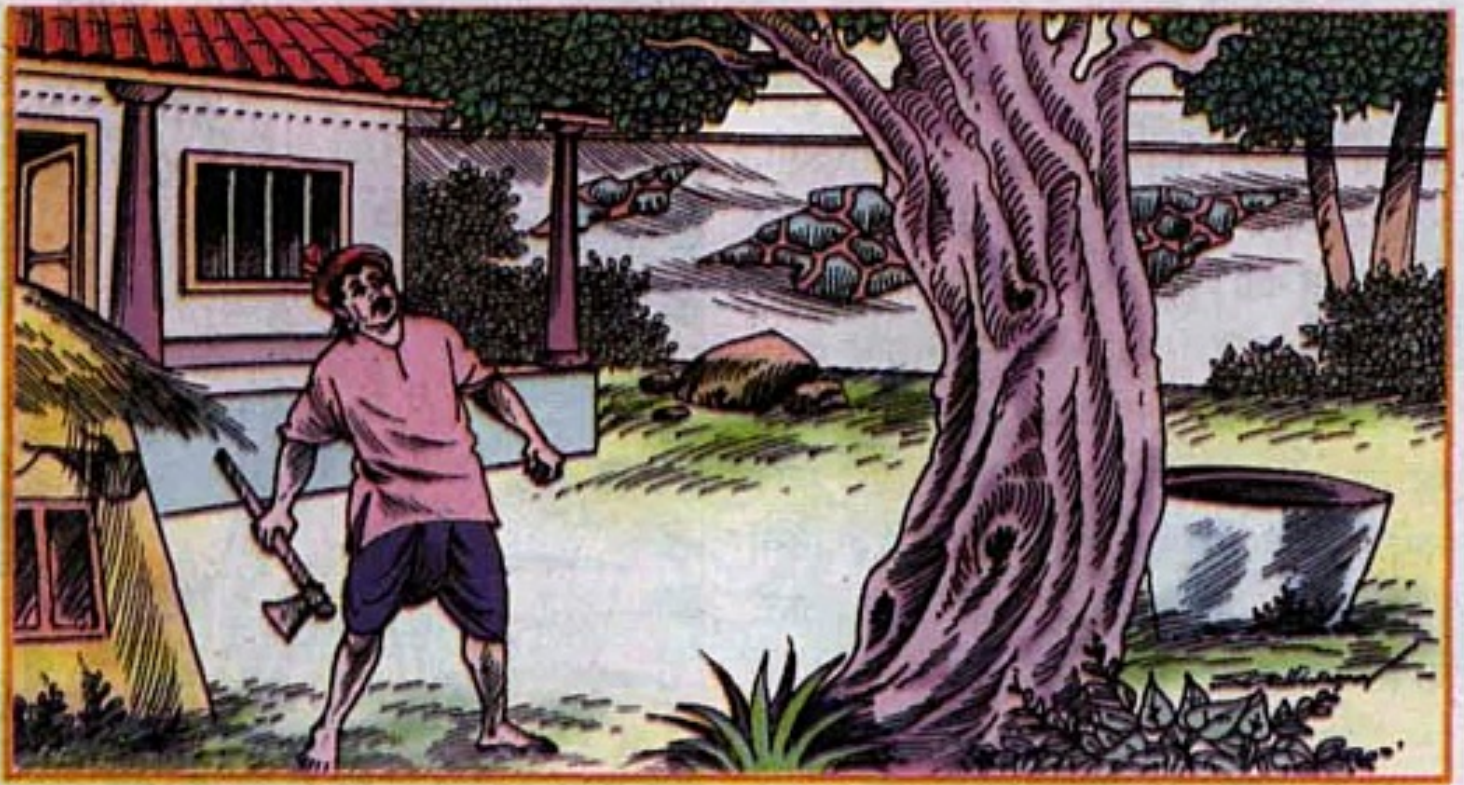
उसने कहा, "रसोई बनाने के लिए घर में लकड़ियाँ नहीं हैं। हाट में लकड़ियाँ खरीदने के लिए मेरे पास रक़म नहीं है। इसीलिए लाचार होकर शाखा तोड़ डाली।"

तब सुनंदा प्रत्यक्ष होकर बोली, "यह पेड़ लंबे अर्से से मानवों की सेवा करता आ रहा है। यह भगवान का प्रिय पेड़ है। उन्होंने ही मुझे इसका उपकार करने भेजा। मैं इस पेड़ पर निवास करनेवाली देवी हूँ। भविष्य में कभी भी किसी भी पेड़ का अपकार या अहित मत करना। जो भी तुम्हें चाहिए, मुझसे माँगना। मैं दूँगी।" कहती हुई उसने वहीं का वहीं एक नये चूल्हे की सृष्टि की और उसे सौंपा।

जब-जब कोदंडराम चाहता, तब-तब उस चूल्हे से पर्याप्त अग्नि निकलती जिसे वह उपयोग में लाता। जब वह नहीं चाहता, तब वह अग्नि बुझ जाती। इस के चार दिनों के बाद हाथ में कुल्हाडी लिये फिर वह पेड़ के पास आया।

सुनंदा देवी यह दृश्य देखकर घबरा गयी और इसका कारण पूछा। तब कोदंडराम ने कहा, "मेरी माँ बहुत बीमार है। उसका इलाज करने के लिए वैद्य बडी रक़म की माँग कर रहा है। इसके लिए अपना घर बेचने के अलावा कोई दूसरा चारा नहीं है। जो खरीदने जा रहा है, उसका कहना है कि पेड़ को काट देने पर ही मैं घर खरीदूँगा, क्योंकि वह घर के पिछवाड़े के पेड़ को अपने लिए अशुभ मानता है। इसीलिए इस पेड़ को समूल काटने आया हूँ।" यों कहकर उसने पेड़ को काटने के लिए कुल्हाडी उठायी।

सुनंदा ने उसे रोकते हुए कहा, "तुम अपनी माता को लाकर इस पेड़ के नीचे लिटा दो। इसकी हवा से तुम्हारी माँ दो-तीन दिनों में स्वस्थ

हो जायेगी। मेरी बात पर विश्वास करो।''

कोदंडराम ने सुनंदा के कहे अनुसार ही किया। दो दिनों के अंदर ही उसकी माँ चंगी हो गयी। उस दिन से उस परिवार के सभी सदस्य उस पेड़ की पूजा करने लगे। जो माँगते थे, वह पेड़ उन्हें देता था, इसीलिए उसका नाम कल्पवृक्ष पड़ा। गाँव के लोग भी वहाँ आने लगे और अपनी-अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए उसकी पूजा करने लगे।

यों पेड़ पर की देवी ने कई लोगों को वरदान दिये। लोग पेड़ों को कष्ट न पहुँचायें, इसके अनेक उपाय उसने सुझाये। उन्हें दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के मार्ग भी बताये। कितने ही बीमार लोगों की चिकित्सा की। परंतु कुछ लोग चाहते थे कि वह ऐसे वर उन्हें दे, जिनसे वे दूसरों की हानि कर सकें। पर देवी ऐसी इच्छाओं की पूर्ति नहीं करती थी और हितबोध करती थी कि वे सही मार्ग पर चलें और गंदे विचारों से दूर रहें। जिन्हें ये हितबोध पसंद नहीं आते थे, वे दुष्प्रचार करने लगे कि पेड़ में समस्त इच्छाओं की पूर्ति करने की शक्ति नहीं है।

यह बात जब सुनंदा को मालूम हुई तो उसने पारिजात कल्पवृक्ष से मन ही मन प्रार्थना की, ''हे पारिजात कल्पवृक्ष, ऐसा वर दो, जिससे मुझे पहले ही ज्ञात हो जाए कि आनेवाले लोगों की क्या-क्या इच्छाएँ हैं। और अगर कोई बुरी इच्छाएँ लेकर आयें तो उन्हें उन इच्छाओं का स्मरण न हो।''

तब सुनंदा के कानों में पारिजात वृक्ष की ये बातें गूंज उठीं। ''अब तुममें ज्ञानोदय हो गया। जिस वृक्ष जाति ने अब तक तुम्हें आश्रय दिया, उस वृक्ष जाति का और उपकार करोगी तो तुम शाप - मुक्त होकर देवलोक आ पाओगी।''

सुनंदा कल्पवृक्ष के इस आश्वासन से बहुत खुश हुई। परोपकार करने और उपयोग में आनेवाली अपनी समस्त शक्तियों को विविध जाति के वृक्षों में उसने बांटा और देवलोक लौटी।

तब से लेकर पेड़ ही देवी-देवता बनकर, मानव के कितने ही उपकार करते आ रहे हैं।

अरुणाचल प्रदेश की एक लोक कथा

'सूर्योदय का देश' नाम से लोकप्रिय अरुणाचल प्रदेश उत्तर-पूर्वी राज्यों में सबसे बड़ा है। यह उत्तर में हिमालय की हिमाच्छादित श्रेणियों से लेकर दक्षिण में ब्रह्मपुत्र की घाटी की समतल भूमि तक फैला हुआ है।

अरुणाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा २० फरवरी १९८७ को मिला। यह बहुत लम्बी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से जुडा हुआ है। इसके पश्चिम में भूटान, उत्तर तथा उत्तरपूर्व में चीन और पूरब में म्यनमार है। इसकी सीमा आसाम और नागालेण्ड से भी लगती है।

राज्य का क्षेत्रफल ८३,७४३ वर्ग कि.मी. है। यहाँ की जनसंख्या दस लाख इकान्यवे हजार एक सौ सतरह है। पूरा राज्य मुख्यतः पाँच नदी-घाटियों में बिभाजित है। इसमें ऊँचे पर्वत और घने जंगल भी हैं।

अरुणाचल लगभग २० मुख्य आदिवासी जातियों तथा अनेक उपजनजातियों का आवास है। इन आदिवासियों की अपनी-अपनी अनोखी पहचान है और ये अलग-अलग बोलियाँ बोलते हैं।

प्रदेश की राजधानी इटा नगर है। इस प्रदेश में अनेक प्रकार के घने जंगलों का प्राचुर्य है। पाँच हजार से ऊपर पौधे, ८५ क्षेत्रीय स्तनपायी, ५०० पक्षी, भारी संख्या में तितलियाँ, रेंगनेवाले प्राणी तथा कीट यहाँ पाये जाते हैं।

बाल-बाल बच गये !

एक छोटे से सुंदर गाँव निशिंग में दो भाई रहते थे। बड़ा भाई नीमा तेज था, लेकिन छोटा न्या सभी अन्य छोटे बच्चों के समान हडबड़िया और तुनुक मिजाज था।

एक दिन जब उनके माता-पिता आखेट के लिए बाहर गये थे, एक दुष्ट व्यक्ति अप्पा पिली सूअर चुराने के लिए बाँस का एक बडा पिंजड़ा लेकर वहाँ आया। उसकी नजर घर में अकेले
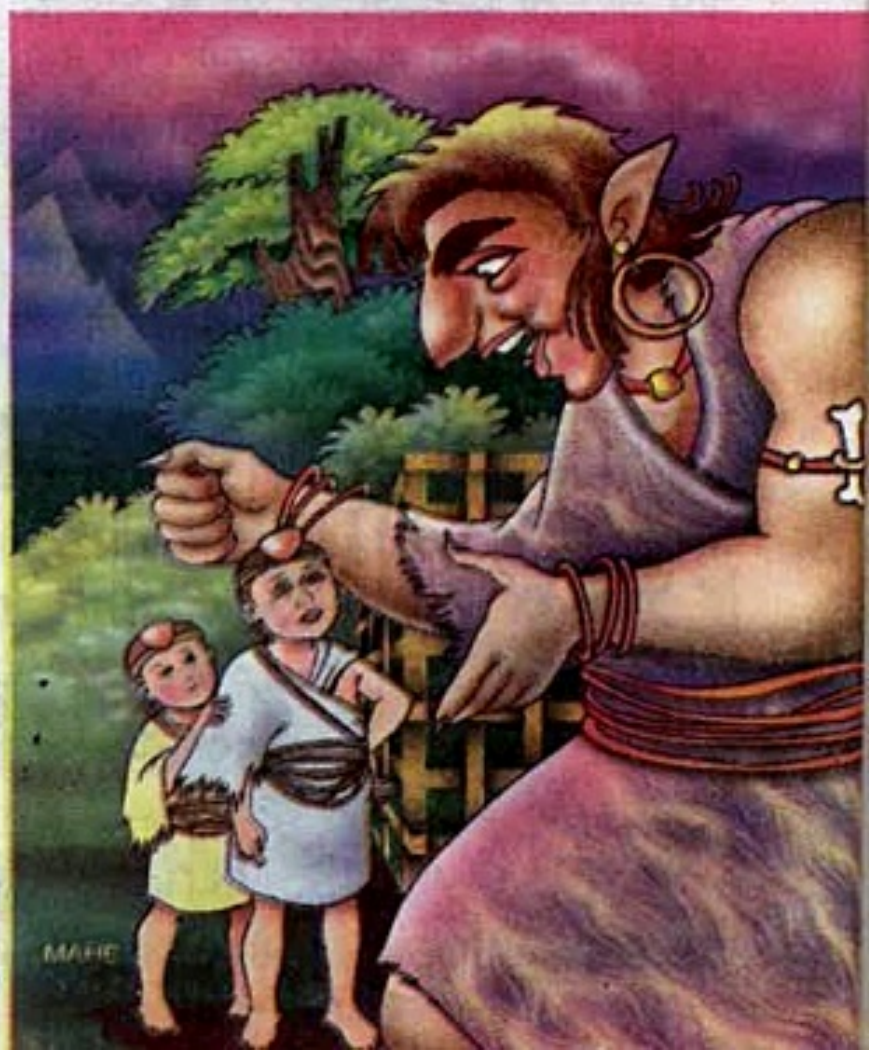
अपने आप खेलते हुए दो छोटे-छोटे बच्चों पर पड गई।

"आह! कितना स्वादिष्ट खाना बनेगा इनसे! कितना कोमल माँस है!" यह सोचकर उसके मुँह में पानी आ गया। "लेकिन मुझे इन्हें पड़ोसियों से नजर बचाकर पकड़ना होगा।" उसने एक योजना बनाई। "बच्चे केला पसन्द करते हैं।" उसने सोचा और पास के एक पौधे से केलों का एक बड़ा गुच्छा तोड़कर बाँस के पिंजड़े में रख लिया।

तब वह बच्चों के पास जाकर मुस्कुराते हुए बोला, "बच्चो! मैं तुम्हारा पुराना चाचा हूँ। देखो, मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ!"

वह नीमा को मूर्ख नहीं बना पाया। "चाचा? मुझे नहीं मालूम मेरे ऐसे बड़े और बदशक्ल चाचा भी हैं।" उसने सोचा। लेकिन न्या ने दरवाजा खोल दिया और अप्पा पिल्ली को अन्दर आने दिया। "हमारे लिए आप क्या लाये हैं चाचा?" न्या ने पूछा।

अप्पा पिल्ली ने बाँस के पिंजड़े का दरवाजा खोला और कहा, "अन्दर देखो! मैं तुम्हारे लिए स्वादिष्ट केले लाया हूँ। तुम्हें केले पसन्द हैं न?"

न्या ने जब पीले-पीले गूदेदार केले देखे तो वह दौड़कर अन्दर चला गया। नीमा को शक हो रहा था, किन्तु केलों को देखकर उसके मुँह में पानी आ गया। वह भी पीछे-पीछे चला गया। अप्पा पिल्ली ने झट दरवाजा बंद कर दिया। "आ गये प्यारे।" वह घुरघुरा कर हँसा।

पहाड़ की गुफा में अपना घर वह शीघ्र लौट गया। "अब डेगची को तैयार रखो और काफी आग जलाओ।" उसने पत्नी से आनन्द विभोर होकर कहा। "हमलोग एक विशेष भोज लेंगे।

उसकी पत्नी बच्चों को देखकर इतनी प्रसन्न हुई कि सब काम छोड़कर उसने डेगची में पानी भरा और उसे आग पर चढ़ा दिया। तब उसके पति ने डेगची में पिंजड़ा खाली कर दिया।

नीमा और न्या तैरना जानते थे, इसलिए वे डेगची में पानी के ऊपर तिरते रहे। "पत्नी, देखो जरा, पानी खौल रहा है कि नहीं!" उन्होंने अप्पा पिल्ली की आवाज सुनी। इससे नीमा के मन में एक विचार आया। उसने न्या के कान में धीरे से कुछ कहा। दोनों ने बर्तन के पेंदे तक डुबकी

लगा ली। जब पत्नी ने डेगची में झाँककर देखा तो पानी में कुछ बुलबुले थे। वास्तव में बच्चे पानी के अंदर साँस ले रहे थे। लेकिन उस मूर्खा ने सोचा कि पानी खौल रहा है।

"तुम्हारा भोज शीघ्र ही तैयार हो जायेगा!" उसने चिल्लाकर कहा। "पानी खौल रहा है और माँस जल्दी ही पक जायेगा।"

स्वास्थ्य पर ध्यान देनेवाले दोनों पति-पत्नी भोजन करने के लिए हाथ धोने गये। जब बच्चों ने देखा कि वे अकेले रह गये तो वे डेगची से उछलकर बाहर आ गये। उन्होंने गुफा के एक आरामदेह कोने में पड़े अप्पा पिल्ली के दोनों शिशुओं को डेगची में डाल दिया। वे जोर-जोर से चीखने चिल्लाने लगे, क्योंकि तब तक पानी काफी गर्म हो गया था।

"भागो न्या, कहीं दोनों अप्पा पिल्ली हमें देख न लें।" वे जंगल में बड़ी नदी की ओर दौड़ने लगे।

तभी दोनों अप्पा पिल्ली भोजन की याद कर जीभ चटकारते हुए गुफा में लौटे। डेगची से चिल्लाहट की आवाज सुनकर उन्हें आश्चर्य हुआ। जब वे डेगची के पास गये तो वे अपने ही बच्चों को सिझते देख काँप गये।

पत्नी ने अपने उबलते बच्चों को डेगची से निकाला और मातृ सुलभ पीड़ा से आँसू बहाते हुए कहा, "बेचारे मेरे, नन्हीं सी जान! तुम तो करीब-करीब पक ही गये। यदि हम नहीं देखते तो तुम्हें अपना भोजन भी बना लेते।"

"यह निशि के बच्चों का काम है।" क्रोधित पति ने कहा। "आओ, उन्हें पकड़ने में मेरी मदद करो। हमें आज निश्चित रूप से उन्हें दिन का भोजन बनाना है, कम से कम जो कुछ उन्होंने किया उसका बदला लेने के लिए।"

अप्पा पिल्ली दम्पति ने गुफा के बाहर उन्हें भागते हुए देख लिया और उनका पीछा करना शुरू किया। शीघ्र ही वे उनके बहुत करीब आ गये। जब बच्चे नदी किनारे पहुँचे और पीछे मुड़कर देखा तो अप्पा पिल्ली दम्पति तेजी से दौड़ रहे थे। "जल्दी न्या! वे हमें पकड़ें इसके पहले नदी के पास वाले वृक्ष पर चढ़ जाओ।" नीमा चिल्लाया। दोनों बच्चे शीघ्र ही लम्बे वृक्ष पर चढ़ गये।

अप्पा पिल्ली पेड़ के पास आकर अनिश्चित रूप से खड़े रहे। "चढ़ो, चढ़ो।" पत्नी ने पति को उकसाया।

कला और दस्तकारी

अरुणाचल प्रदेश में दस्तकारी और बुनाई की एक समृद्ध परम्परा है। राज्य बाँस तथा बेंत की दस्तकारी के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के लोग बेंत का फर्नीचर, टोपी, हेडगेयर तथा ट्रे जैसे उत्पादों का निर्माण करते हैं। टोपियों और हेडगेयर के नमूने आदिवासी की जाति के अनुसार अलग-अलग होते हैं।

अरुणाचल प्रदेश दानों और घास के बने अलंकारों के लिए भी प्रसिद्ध है। सभी प्रकार के अलंकार जैसे कण्ठा, कलाई बंद, कटिबंद, हेडगेयर तथा कर्णफूल दानों से सुंदर ज्यामितिक नमूनों में बनाये जाते हैं। स्त्री-पुरुष दोनों इन्हें पहनते हैं। घास का कण्ठा स्त्रियाँ बनाती हैं। यह सितम्बर और फरवरी के बीच नदी-नालों के किनारे उगनेवाले सरकण्डों से बनाया जाता है।

राज्य हथकरघा के नमूनों का भण्डार है, क्योंकि २० आदिवासी जातियाँ और १०० से भी अधिक उपजातियाँ अनोखी और आकर्षक नमूने बुनती हैं। कालीन और थैलों की बुनाई लोकप्रिय दस्तकारी है।

''मुझे पेड़ पर चढ़ना नहीं आता।'' उसने अपने ओठ काटते हुए कहा। ''मुझे इन्हीं बच्चों से पूछने दो कि कैसे वृक्ष पर चढ़ें। हो सकता है वे इसका राज बता देने की बेवकूफी करें।''

तब उसने उन्हें संबोधित किया, ''तुम कितने होशियार हो, और कितनी फुर्ती से तुम इतने लंबे पेड़ पर चढ़ गये।'' दोस्ती का जितना बहाना वह बना सकता था, उसने बनाते हुए कहा। ''तुम्हें पेड़ पर चढ़ना किसने सिखाया?''

''दादा जी ने।'' न्या ने पट उत्तर दिया। नीमा ने उसे चुपचाप रहने के लिए चिंकोटी काट दी।

''आश्चर्यजनक !'' अप्पा पिल्ली ने विस्मयपूर्वक कहा। ''आह ! देखें, तुमने पेड़ पर चढ़ने का पाठ ठीक से सीखा है या नहीं ! अब बताओ कि पेड़ के चिकने धड़ पर अपनी पकड़ कैसे बनाये रखते हो?''

''मैं जानता हूँ।'' बेवकूफ न्या ने भेद खोल दिया। ''तुम्हें पेड़ के धड़ों पर बढ़ने वाली बल्लरी की सहायता लेनी चाहिए।'' नीमा ने उसे चुप करने की कोशिश की, लेकिन देर हो चुकी थी। राज खुल चुका था। बच्चों को सचमुच वृक्ष से लिपटी हुई एक मजबूत लता मिल गई थी जिसकी मदद से वे चढ़ गये थे।

अप्पा पिल्ली ने पेड़ के चारों ओर देखा और

उसे सचमुच लता मिल गई। "अहा !" वह हँसा। "अब तुम मेरे हाथ आ गये।"

तब उसने पत्नी से कहा, "मैं ऊपर जाकर बच्चों को नीचे फेंक दूँगा। ध्यान रहे, कुल्हाड़ी से उनके सिर काट देने के लिए तैयार रहना। इस बार हमें उन्हें भागने का मौका कभी नहीं देना चाहिए।" वह सहमत हो गई और सिर के ऊपर हाथ में कुल्हाडी लेकर खडी हो गई।

लेकिन चतुर नीमा तब तक बचने की योजना बना चुका था। उसने अपने साथ लाये छोटा-सा चाकू निकाला और लता को ऊपर से काटना शुरू किया। अप्पा पिल्ली लता की सहायता से ऊपर चढ़ता चला जा रहा था। अभी वह आधा ही चढ़ पाया था कि लता टूट गई और वह चीखता-चिल्लाता धम से नीचे आ गिरा।

जैसे ही वह जमीन पर गिरा, उसकी पत्नी ने, जो अपने पति का आदेश-पालन के लिए तत्पर खड़ी थी, उसकी बडी खोपडी पर कुल्हाड़ी दे मारी। घोर अनर्थ ! उसकी दर्दनाक चीख से वृक्ष थरथराने लगे और धरती काँप गई। सौभाग्यवश अप्पा पिल्ली जल्दी नहीं मरते, इसलिए वह पत्नी का आक्रमण झेल गया।

बेचारा अप्पा पिल्ली को तारे दिखाई पड़ने

नृत्य

आदिवासियों के जीवन में नृत्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी विशेष कर प्रमुख पर्वों और अनुष्ठानों के अवसर पर तथा कभी-कभी मनोरंजन के लिए भी अनेक प्रकार के नृत्य करते हैं। आदिवासी जातियों में भिन्नता के अनुसार नृत्यों में भी भिन्नता होती है, जिनमें बौद्धों की उच्च शैली की धार्मिक नृत्य नाटिका से लेकर वांचो तथा नाक्टेस जन जातियों के युद्ध-नृत्य शामिल हैं।

ये नृत्य अधिकांश सामूहिक नृत्य हैं जिनमें स्त्री-पुरुष दोनों भाग लेते हैं। किन्तु कुछ अनुष्ठान संबंधी नृत्य हैं जिनमें स्त्रियों के लिए भाग लेना मना है। लोक प्रिय नृत्यों में कुछ हैं - सिंह, याक तथा मयूर नृत्य। अधिकांश नृत्य गीतों के साथ किये जाते हैं जो समवेत गान होते हैं।

लगे - पूरी आकाश गंगा - और उसका सिर धूरी पर पृथ्वी की तरह चक्कर काटने लगा। चीख के साथ चक्कर बन्द होने पर वह उठ बैठा और अपनी पत्नी को जी भर कर धिक्कारा ।

उसके क्षत-विक्षत सर से रक्त की धारा बह रही थी, लेकिन उसने परवाह नहीं की । उसने पत्नी से कुल्हाड़ी झपट ली और पेड़ काटने लगा। ''हम अभी भी तुम्हें नहीं छोडेंगे ।'' वह बच्चों पर गरजा जो पेड़ पर बैठे थर-थर काँप रहे थे।

''नीमा, हमारा सर्वनाश हो गया। हम लोग आज निश्चित रूप से नहीं बच पायेंगे !'' न्या जोर-जोर से सिसकते हुए रोने लगा। परंनु नीमा कठोर धातु से बना था। ''नही , हम नहीं मरेंगे।'' उसने कहा। ''भगवान अच्छे लोगों की कभी हानि नहीं होने देते। हम लोगों ने कोई पाप नहीं

किया। हम लोग वृक्ष की आत्मा और नदी की आत्मा से सहायता के लिए प्रार्थना करेंगे।''

दोनों भाई जोर से बोलकर प्रार्थना करने लगे। वृक्ष कटते ही हिला और झुकता हुआ गिर पड़ा।

लेकिन उनकी प्रार्थना सुन ली गई - क्योंकि पेड़ बच्चों के साथ नदी में गिरी। और अप्पा पिह्ली उसे खींचकर किनारे पर लाये, इसके पूर्व ही नदी उसे तेजी से बहाकर बहुत दूर ले गई। बच्चे अप्पा पिह्ली दम्पति से बाल-बाल बच गये और पुनः अपने घर पहुँच गये।

प्रकृति का खज़ाना

अरुणाचल प्रदेश को 'प्रकृति का ख़ज़ाना' तथा ऑर्किड और अनेक प्रकार की अन्य स्थानिक वनस्पतियों का गृह कहा जाता है। यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रचुर जंगल हैं जिनमें विविध प्रकार की वनस्पति तथा पशु-पक्षी निवास करते हैं।

सम्पूर्ण राज्य एक जटिल पर्वतीय प्रणाली का निर्माण करता है। इसकी ऊँचाई पर्वत के निचले भाग में ५० मी. से लेकर क्रमशः बढ़ती हुई चोटियों पर सात हजार मी. तक चली गई है। अनेक नदियाँ तथा नाले दून पहाड़ियों से होकर आड़े-तिरछे बहते हैं।

अपने भारत को जानो

यदि तुमने पढ़ने की आदत विकसित की है तो भारतीय पौराणिक कहानियाँ अवश्य पढ़ी होंगी। घटनाओं को शायद सुगमता से याद कर पाओ, किन्तु इन कथाओं में वर्णित स्थानों और पात्रों के नाम भूल सकते हो। इस महीने की प्रश्नोत्तरी तुम्हारी स्मरण शक्ति की जाँच करेगी। इनके उत्तरों को कहीं लिख लो और जब इनके सही उत्तर प्रकाशित हो जायें तब उनसे मिलान करो।

१. भारतीय पुराणों में वर्णित सात चिरंजीवी कौन हैं?

२. देवताओं के कोषाध्यक्ष कौन थे?

३. सूर्य की पत्नी का क्या नाम था?

४. गणेश और कार्तिकेय अपनी माता से कुछ प्राप्त करना चाहते थे। उन्होंने दोनों में प्रतियोगिता रखी। उनके हाथ में क्या था?

५. महाभारत में सत्यवती एक मछुआरे की कन्या है। इस नाम से एक पिता और पुत्र जुड़े हुए हैं। उनके नाम क्या हैं?

६. बालक भरत को सिंहशावकों के साथ खेलना बहुत पसन्द था। वह एक और नाम से भी विख्यात है। वह कौन-सा नाम था?

७. अर्जुन ने किसी के पीछे छिपकर भीष्म पर घातक बाण चलाया, जिसके ऊपर भीष्म बाण नहीं चला सकते थे। वह व्यक्ति कौन था?

८. ककुत्शा, त्रिशंकु और अम्बरीष में क्या समानता थी?

९. पृथा का दूसरा नाम अधिक लोकप्रिय था? वह क्या था?

(उत्तर अगले महीने में)

जनवरी २००३ प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. १९५१ - नई दिल्ली

२. अप्पू हाथी

३. चाँद राम। उसका समय था १ घं. २९ मि. २९ सें.

४. आठ बार - १९२८, १९३२, १९३६, १९४८, १९५२, १९५६, १९६४, १९८०

५. पी.टी. उषा

६. कमलजीत सन्धु

७. (अ) महिला क्रिकेट (ब) अन्तर-विद्यालय फुटबॉल (स) गोल्फ

८. (अ) मिल्खा सिंह (ब) सुनील गावस्कर (स) ध्यानचन्द

९. मिहिर सेन १९५८ में; वह अंतलांतिक से प्रशान्त महासागर में पनामा नहर तैरकर पार करनेवाला पहला गैर अमरीकी था।

१०. प्रकाश पादुकोने, १६ वर्ष

११. चैल में, हिमाचल प्रदेश में शिमला के निकट
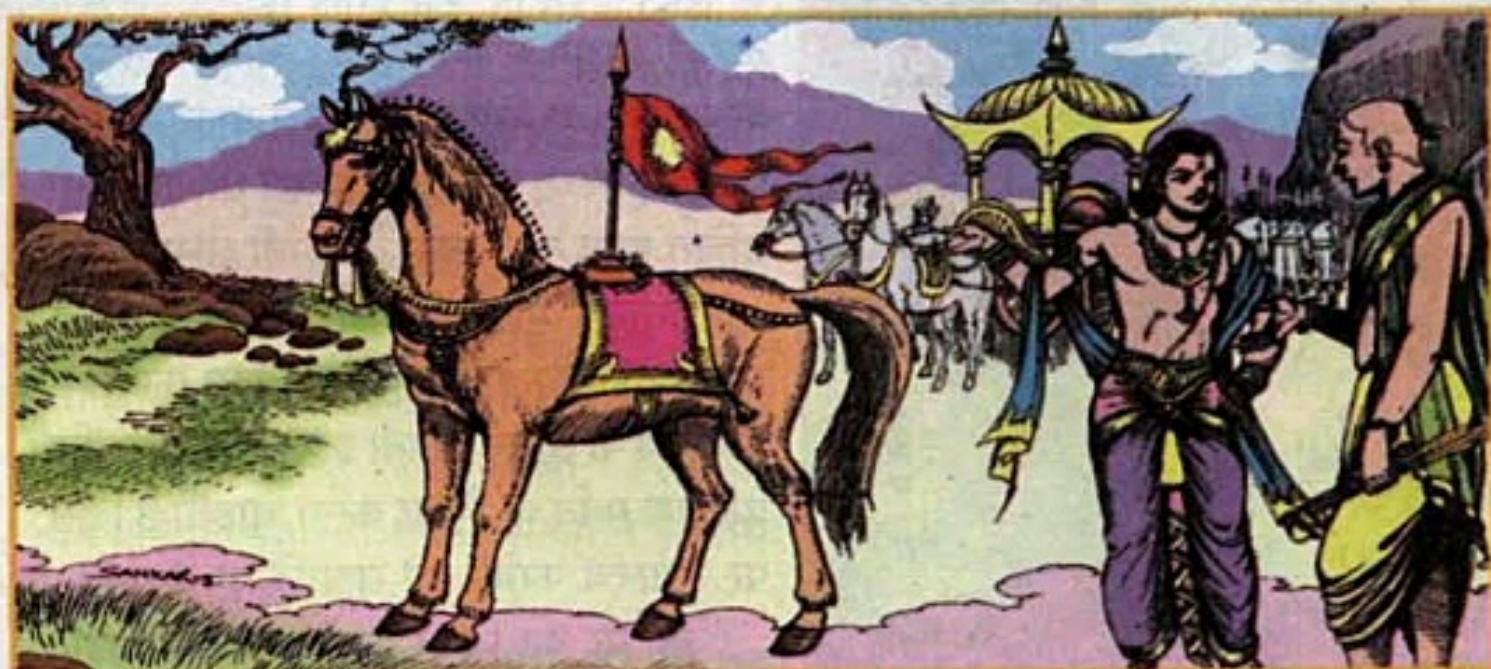
विघ्नेश्वर

पांडवों ने नारद के सुझाव के अनुसार विघ्नेश्वर की अर्चना की। धौम्य को पुरोहित बनाकर गणेशव्रत कियगपा। तब सबने विराट राजा के दरबार में अज्ञात वास समाप्त किया।

श्रीकृष्ण की मदद से पांडवों ने कौरवों के साथ युद्ध में विजय प्राप्त की। हस्तिनापुर में युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ। उसके बाद उन्होंने अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय किया।

यज्ञ के घोड़े के साथ सेना लेकर अर्जुन चल पड़े। पांडवों के पुरोहित धौम्य भी उनके साथ थे। यज्ञ का घोड़ा कई देशों से होकर निकला। कई राजाओं ने युधिष्ठिर के शासन को स्वीकार करते हुए उनके सामंत बनना स्वीकार कर लिया। घोड़ा चलते-चलते एक प्रदेश में रुक गया। अर्जुन ने घोड़े के रुक जाने का कारण पुरोहित धौम्य से पूछा। धौम्य यह संकेत करते हुए आगे बढ़े, "आप चलते जाइये, मैं इसका कारण बताऊँगा।" अर्जुन अपनी सेना के साथ उनके पीछे चले। थोड़ी दूर जाने पर एक महानगर दिखाई दिया। उस नगर के बीच. विघ्नेश्वर की एक विशाल मूर्ति थी। एक पहाड़ी चट्टान को तराशकर वह मूर्ति गढ़ी गई थी।

धौम्य ने अर्जुन को समझाया, "हे अर्जुन, विघ्नेश्वर की पूजा-अर्चना कीजिए। इसके बाद मैं आपको वातापि गणपति के रूप में प्रसिद्ध इस देवता से सम्बन्धित वातापि नगर की कहानी विस्तारपूर्वक सुनाऊँगा।"

अर्जुन ने वातापि गणपति की भक्तिपूर्वक

आराधना की। तब धौम्य वातापि नगर की ओर चल पड़े। उनके पीछे चलते हुए अर्जुन ने उस नगर को देखा। किसी जमाने में उस नगर का जो वैभव था, वह अब भी थोडा-बहुत बच रहा था। जो लोग वहाँ बसे थे, वे अर्जुन के आगमन पर खुश हुए और उनसे निवेदन किया कि वहाँ शासन का उचित प्रबंध करके नगर का पुनरुद्धार करें।

"अर्जुन, यही वातापि नगर है। नगर के बीच विघ्नेश्वर की जो मूर्ति है, वह अगस्त्य महामुनि के द्वारा स्थापित अदभुत प्रतिमा है। यह वातापि गणपति के तीर्थ के रूप में पुकारा जाता है। उसकी विशेषता सुनाता हूँ। सुनिये। इन शब्दों के साथ धौम्य उस नगर का वृत्तांत सुनाने लगे :

गंगा नदी कवेर नामक राजर्षि के कमण्डलु में गिरकर कावेरी का रूप धरकर उनकी पुत्री के रूप में आश्रम में बढ़ने लगी। अगस्त्य ने उस कन्या के साथ विवाह की इच्छा प्रकट की।

"अगस्त्य, कावेरी की इच्छा भी जान लेना उचित होगा न।" कवेर ने अपनी सम्मति दी।

अगस्त्य मुनि उस आश्रम में कावेरी के साथ स्नेहपूर्वक रहने लगे। एक दिन कावेरी ने अगस्त्य के सामने अपनी इच्छा प्रकट की कि वह सह्य पर्वत पर विहार करना चाहती है। इस पर अगस्त्य कावेरी को सह्याद्रि पर ले गये।

वहाँ पर वन विहार करते समय एक छोटे तालाब में कमल को देख कावेरी मुग्ध हो उठी और उस तालाब में पहुँची। इस पर पानी के हिलारों के स्पर्श से वह अचानक जल के रूप में बदल गई और सह्य पर्वत की चोटियों पर से कावेरी नदी के रूप में नीचे बह चली।

इसके बाद अगस्त्य मुनि कावेरी की याद करते बहुत समय तक ब्रह्मचारी ही रह गये। फिर बड़ी तपस्या करके वे एक महा ऋषि कहलाये। एक दिन उन्होंने जंगल में एक पेड़ की डाल पर औंधे मुँह लटकने वाले पितृदेवताओं को देख उनसे पूछा, "आप लोग कौन हैं? आपकी इस हालत का कारण क्या है?"

इसके जवाब में वे बोले, "हमारे वंश में पैदा हुए अगस्त्य जब तक गृहस्थ बनकर संतान पैदा नहीं करेंगे, हमें इसी हालत में रहना पड़ेगा।"

यह जवाब पाकर अगस्त्य महर्षि ने अपनी दिव्य दृष्टि के द्वारा जान लिया कि विदर्भ राजा के यहाँ कावेरी के अंश से लोपामुद्रा नाम से

एक कन्या पैदा होकर बड़ी हो गई है। इस पर उन्होंने विदर्भ राजा के यहाँ जाकर कहा कि वह लोपामुद्रा का उनके साथ विवाह कर दे।

विदर्भ राजा यह सोचकर संकोच में पड़ गये कि जंगलों में भटकने वाले मुनि के साथ राजकुमारी का विवाह कैसे करें? यदि न करें तो शायद वे शाप दे बैठें। उसी वक़्त लोपामुद्रा ने राजा का संदेह दूर करते हुए कहा, ''पिताजी, आप बिना चिंता के अगस्त्य महामुनि के साथ तुरंत मेरा विवाह कर दीजिए।''

विदर्भ राजा ने लोपामुद्रा का विवाह अगस्त्य महर्षि के साथ करके उसे उनके साथ भेज दिया। आश्रम में पहुँचने पर एक दिन अगस्त्य महर्षि ने लोपामुद्रा से बताया, ''मैंने अपने पितृदेवताओं को पुन्नाम नरक से मुक्त करने के लिए संतान पाने के ख्याल से तुमसे विवाह किया है।''

इस पर लोपामुद्रा ने अपनी मैली साड़ी को देख दुखी होकर कहा, ''आपने मेरे साथ विवाह किया, इससे आपकी जिम्मेदारी पूरी नहीं होती। मैं राजकुमारी के रूप में पैदा होकर पली। उसके अनुरूप उत्तम वस्त्र और आभूषण ला देना आपका कर्तव्य है। इसके लिए आवश्यक धनार्जन भी आपकी जिम्मेदारी है।''

अगस्त्य ने अपनी पत्नी की बातों की सचाई समझ ली और वे धन अर्जन करने के लिए चल पड़े। उन्होंने कई राजाओं के पास जाकर कहा कि राज्य शासन पर खर्च करने के बाद जो धन बच जाता है, वह मुझे दे दो। पर सभी राजाओं ने कहा कि शासन पर खर्च के लिए उनके खजाने का धन बराबर नहीं होता है, उलटे कम ही पड़ रहा है, इसलिए हमें भी ज़्यादा धन कमाने का कोई उपाय बताने की कृपा करें।

इस पर अगस्त्य निराश हो गये। जब वे एक जंगल के रास्ते से होकर चल रहे थे, तब उन्हें लंबोदर विघ्नेश्वर की प्रतिमा जैसी कोई शिला दीख पड़ी। उस महाशिला को ही विघ्नेश्वर मानकर अगस्त्य ने भक्तिपूर्वक प्रणाम किया और उनसे प्रार्थना की, ''गणपति देव ! मैं तपस्या को छोड़ दूसरी चीज़ की चिंता नहीं करता। धन कमाने की कोई विद्या मैं नहीं जानता। ऐसी हालत में मुझे धन कैसे हाथ लग सकता है? आप कृपया मुझे कोई रास्ता दिखाइये।''

तब विघ्नेश्वर ने दर्शन देकर कहा, ''महर्षि ! आप तो एक शिला के साथ बात कर रहे हैं !''.

अगस्त्य ने प्रणाम करके अपनी समस्या बताई। विघ्नेश्वर प्रसन्न होकर बोले, ''महामुनि, आप उचित स्थान पर ही पहुँच गये हैं। थोड़ी देर में आपको इल्वल नामक व्यक्ति भोजन के लिए निमंत्रण देगा। आप वहाँ पर जाइये। उनके पास ढेर-सारी संपत्ति पड़ी हुई है। आपके द्वारा एक कार्य भी संपन्न होना है।''

''गणपति देव ! इस महाशिला में मुझे आपकी आकृति दिखाई दी। इसलिए मेरी इच्छा है कि यह शिला अपूर्व गणपति की प्रतिमा के रूप में बदल जाये !'' अगस्त्य ने निवेदन किया।

इसपर विघ्नेश्वर यह कहकर अदृश्य हो गये - ''आपकी इच्छा की पूर्ति हो।''

अगस्त्य थके-मांदे थे। उन्हें बड़ी भूख लगी थी। थकावट के मारे शिथिल हो उस शिला से सटकर वे बैठ गये। तभी उन्हें अतिथियों को साथ लेकर चले आ रहे इल्वल दिखाई दिये; तब अगस्त्य की समझ में सारी बात आ गई।

उस जंगल में वातापि और इल्वल नामक दो बड़े मायावी राक्षस थे। वे मुनियों और मुसाफ़िरों को मारकर धन लूट लेते और उसे एक पत्थरवाले किले में जमा कर देते थे। इल्वल बड़े ही धर्मात्मा राजा के वेष में लोगों को आतिथ्य देने के बहाने बुला ले जाता, उनका आदर करता, उनसे कुशल प्रश्न पूछते वक़्त

वातापि एक मोटे-ताजे बकरे के रूप में बदल जाता। इल्वल उस बकरे को मारकर उसका मांस अतिथियों को खिला देता।

अतिथि जब भर पेट खाकर आराम करने लगते, तब इल्वल पुकार उठता, ''वातापि !'' इस पर वातापि अतिथियों के पेट चीरकर बाहर निकल आता। उन दुष्टों के इस कार्य पर अगस्त्य को बड़ा क्रोध आया।

इल्वल ने अगस्त्य को देखते ही अपने मन में सोचा कि यह कोई बहुत बड़ा ऋषि मालूम होता है। ऐसे लोगों को जितनी संख्या में वह मार सके, उतना अच्छा है। यह सोचकर उसने अगस्त्य के पास ज़ाकर उन्हें भोजन के लिए निमंत्रण दिया।

अगस्त्य ने भूख से तड़पनेवाले के समान अभिनय करते हुए कहा, ''हे धर्मात्मा, आप जैसे लोग इस पृथ्वी पर हैं, इसीलिए यह भूमण्डल अनंत आकाश में लटकता हुआ स्थिर है !'' यों कहकर इल्वल के साथ वे पत्थर के किले में पहुँचे। तब वे इल्वल से बोले, ''हे अन्नदाता, मैं कई दिनों से भूखा हूँ। मुझसे सहन नहीं किया जाता। मैंने एक हज़ार यज्ञ करवाये हैं। इस कारण बकरे के माँस को छोड़ दूसरे किसी तरह के माँस को मैं हजम नहीं कर पाता। इस बीमारी से मैं परेशान हूँ। इसलिए सबसे पहले मुझे बकरे के माँस के साथ भोजन खिलाकर भिजवा दीजिए।''

इल्वल खुश होते हुए बोला, ''ऋषिवर !

शायद आप ही के वास्ते मेरे घर में बहुत दिनों से एक बकरा पलता आ रहा है। उसके अन्दर चर्बी बढ़ चली है।'' यों कहकर बकरे के रूप में स्थित वातापि को मरवा डाला।

अगस्त्य ने बकरे को देख कहा, ''वाह ! यह कैसा बकरा है ! मैंने एक हज़ार यज्ञ तो कराये हैं, लेकिन ऐसे बकरे के माँस का मैंने स्वाद आज तक नहीं चखा है। महाशय, सबसे पहले इसका कलेजा और बढ़िया माँस मुझे खिलायें और बाद में बाक़ी अतिथियों को खिलाइये। मैं पहले ही आपको बता रहा हूँ कि मैं माँस को छोड़ कुछ और नहीं खाऊँगा।''

इसके बाद इल्वल ने बकरे का माँस आग में भूनकर अगस्त्य को परोसा। पूरे बकरे को खाने के बाद अगस्त्य ने डकार लिया।

इल्वल ने आश्चर्य के साथ अगस्त्य से

पूछा, "स्वामी, आप तो बड़े घनापाठी लगते हैं!" अगस्त्य ने मुस्कुराकर कहा, "अजी, तीनों लोक जानते हैं कि मैं महा घनापाठी हूँ। एक मटका भर मद्य भी मंगवा दीजिए।"

इल्वल चकित हो बोला, "महात्मा, क्या आप मद्यपान भी करते हैं?" "मेरे पेट में समुद्र भी समा जाते हैं!" अगस्त्य बोले।

"अच्छी बात है! हमारा वातापि अभी मंगवा देगा।" यों कहते इल्वल ने पुकारा - "वातापि!"

अगस्त्य धीमी आवाज़ में बोले, "अब वातापि कहाँ रहा? वातापि अब लौटकर नहीं आयेगा। जीर्ण, जीर्ण, वातापि जीर्ण।" कहते महामुनि पेट सहलाते बोले, "वातापि तो कभी का हजम हो चुका है।"

इस पर इल्वल डर से काँपते हुए वहाँ से भाग खड़ा हुआ। इस प्रकार वातापि और इल्वल का भयंकर हत्याकाँड का नाटक समाप्त हो गया।

इसके बाद अगस्त्य ने सारा वृत्तांत बाक़ी अतिथियों को सुनाकर पत्थर वाले क़िले में पड़े हुए ढेरों कंकालों को उन्हें दिखाया। वे सब अपनी जान बचाने के कारण कृतज्ञता के साथ महामुनि के पैरों पर गिर पड़े।

अगस्त्य ने उस क़िले में एकत्र धन का अम्बार देखा। उन्होंने अपने लिए आवश्यक धन लेकर सोचा कि बचे हुए धन से एक महानगर का निर्माण कराया जा सकता है और हज़ारों लोग सुखपूर्वक जीवन बिता सकते हैं।

फिर क्या था, अगस्त्य ने सब लोगों में धन बाँटना शुरू किया। समीप के राज्यों से कई लोग आ पहुँचे और अगस्त्य द्वारा धन लेकर वहाँ के स्थायी निवासी बन गये।

विघ्नेश्वर की आकृति वाली महाशिला के चारों तरफ़ एक महानगर बस गया। वातापि जीर्ण के साथ निर्मित वह नगर 'वातापि नगर' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके बाद अगस्त्य ने शासन के सूत्रों को शिलालेखों पर खुदवाकर नगर में रखवाया। इस तरह वह नगर जनता द्वारा शासित एक आदर्श राज्य के रूप में स्थापित हुआ।

ईमानदार का वचन

जब शतानंद विरूप राज्य का शासक था तब जयराज उसका कोषाधिकारी था। वह रोगग्रस्त हो गया और हमेशा पलंग पर ही पडा रहने लगा। शतानंद जब उसे देखने गया तब उसने कहा, ''प्रभु, मैं और ज़्यादा दिन ज़िन्दा नहीं रहूँगा। अच्छा यही होगा कि आप किसी अच्छे कोषाधिकारी को चुनकर उसे नियुक्त कर लें।''

''मैं जानता हूँ कि तुम्हारा परिवार देश सेवा के लिए अर्पित है। तुम्हारे बाद मैंने तुम्हारे पुत्र को ही यह भार सौंपने का निश्चय किया है,'' शतानंद ने दृढ स्वर में कहा।

इस पर जयराज ने चिंतित होते हुए कहा, ''प्रभु, मेरा बेटा ईमानदार और विश्वासपात्र अवश्य है, पर उसमें कोषागार को संभालने की योग्यता नहीं है। मैं एक ऐसे युवक को जानता हूँ, जो समर्थ, सच्चा, विश्वासपात्र और ईमानदार है। वह गोपालपुर में रहता है। उसका नाम गोपी है। लंबे अर्से से आपसे उसका परिचय कराने की सोच रहा हूँ। वह मेरा दूर का रिश्तेदार भी है। शुभ दिन पर उसे ख़बर भिजवाता हूँ।''

शतानंद ने सुन लिया और कुछ कहे बिना चला गया। पर अकस्मात् एक दिन जयराज की मौत हो गयी। उसकी मृत्यु पर राजा बहुत दुखी हुआ। उसने जयराज के परिवार के सदस्यों से गोपी के बारे में विवरण जानना चाहा पर वे कुछ भी बता नहीं पाये। तब राजा ने अपने कुछ नौकरों को गोपालपुर भेजा। उन्होंने बताया कि वहाँ गोपी नामक तीन युवक हैं और वे तीनों समर्थ व योग्य हैं। वे तीनों दिवंगत कोषाधिकारी जयराज के किसी न किसी रूप में रिश्तेदार हैं।

राजा इस बात का पता नहीं लगा पाया कि

- कुलवंत राणा -

मदद लेता था। वह गाँव के उन लोगों को जानता था, जिनमें दान देने के गुण मौजूद थे।

मंत्री ने धर्मवीर से गाँव के चार-पाँच लोगों के बारे में पूछने के बाद कहा, "देखो, तुम्हारे अच्छे दिन आ गये। सुना कि इस गाँव में गोपी नामक तीन युवक हैं। तुम हर एक के पास जाओ और यह कहकर भविष्यवाणी करो कि उन्हें राजा के दरबार में नौकरी मिलनेवाली है। वे जो प्रतिफल देंगे, उसे ले लेना और आराम से ज़िन्दगी काटना।"

धर्मवीर ने संदेह भरे स्वर में पूछा, "मैं नहीं जानता कि आप कौन हैं। आपके कहने पर मैं ऐसी भविष्यवाणी करूँ और बाद में राजा के दरबार में उन्हें नौकरी नहीं मिली तो वे मुझे मार डालेंगे। इसलिए उनके पास जाने से मुझे डर लग रहा है।"

इन तीनों में से वह गोपी कौन है, जिसके बारे में जयराज ने बताया था। मंत्री से इसके बारे में सलाहमशविरा किया तो मंत्री ने खूब सोचने के बाद कहा, "हम बहुरूपियों के वेष में गोपालपुर जायेंगे और खुद तहक़ीकात करेंगे।"

राजा और मंत्री बहुरूपिये बनकर गोपालपुर गये। तीनों गोपियों के बारे में विवरण जाने। जो भी उन्हें जानते थे, उन्होंने तीनों के बारे में एक ही बात बताई। तब मंत्री ने कहा, "प्रभु, ऐसी बातों में अपने लोगों से अधिक पराये लोग ही हमारी मदद कर सकेंगे। चलिये, हम दूसरों से उनके बारे में पूछें।"

उस समय धर्मवीर नामक एक बूढ़ा उन्हें दिखायी पड़ा। वह ग़रीब तो था ही, साथ ही अक़्लमंद और व्यवहार दक्ष भी नहीं था। पेट भरने और दिन गुज़ारने के लिए वह औरों की

"राजा के दरबार में अवश्य उन्हें नौकरी मिलेगी। यह तो निश्चित है। तुम्हें भयभीत होने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि हम भी तुम्हारे साथ आयेंगे। ज्योतिष बताने के बाद प्रतिफल माँगना, परंतु उनसे कहना कि ज्योतिष के फलीभूत होने के बाद ही वह प्रतिफल लूँगा। उससे आराम से ज़िन्दगी गुज़ारना।"

धर्मवीर ने मान लिया। तीनों मिलकर पहले एक गोपी के घर गये। मंत्री ने उस गोपी से कहा, "हम पड़ोस के गाँव के हैं। इस धर्मवीर ने हमें देखते ही हमारे बारे में बहुत कुछ बताया और वे सच निकले। हमारे भविष्य को लेकर भी इसने कई विशेष बातें बतायीं। हम लोगों से जानना चाहते हैं कि यह आदमी सचमुच ज्योतिष का

ज्ञान रखता है या यह केवल संयोग मात्र है। या अटकलबाजी कर रहा है। यह आपके गाँव का है, इसलिए इसे आप अच्छी तरह जानते होंगे, इसीलिए हम इसे यहाँ ले आये। बताइये, इसके बारे में आपका क्या अभिप्राय है।''

''अरे धर्मवीर, तुम और ज्योतिषी! पड़ोस के गाँववालों से पैसे ऐंठने के लिए उन्हें धोखा दे रहे हो?'' गोपी ने गंभीर स्वर में पूछा। धर्मवीर ने निधड़क कहा, ''मैं किसी को धोखा नहीं दे रहा हूँ। इधर कुछ दिनों से आदमियों को देखते ही उनके भूत, भविष्य व वर्तमान के बारे में जानकारी मिल जाती है। इसलिए अपनी इस विद्या का लाभ उठा रहा हूँ। भला यह कैसे धोखा हुआ?''

''ऐसी बात है, तो मेरे बारे में बता। तुम तो मेरे भूत और वर्तमान को जानते ही हो, मेरे भविष्य के बारे में बताना, ''गोपी ने हँसते हुए कहा।

''सुनो। दो दिनों में तुम्हें राजा के दरबार में नौकरी मिलनेवाली है। बताओ, तब मुझे क्या दोगे?'' धर्मवीर ने कहा।

''राजधानी जाना ही जब मेरे भाग्य में बदा नहीं है, तो यहाँ बैठे-बैठे ही दरबार की नौकरी मुझे ढूँढती आयेगी क्या? तुम तो एकदम सनकी हो। ठीक है, जो भी हो, तुम्हारा बताया सच निकला तो तुम्हें दस हज़ार अशर्फ़ियाँ दूँगा।'' गोपी ने हँसी-हँसी में कह दिया।

उसी तरह दूसरे गोपी ने कहा कि अगर उसका ज्योतिष सच निकला तो वह उसे तीन मंजिलोंवाला एक भवन भेंट स्वरूप देगा। परंतु तीसरे गोपी ने कहा, ''अगर मुझे राजा के दरबार में नौकरी मिली तो पहले महीने के वेतन का आधा भाग तुम्हें दे दूँगा।''

उसकी बातें सुनते ही धर्मवीर यह कहते हुए

बेहोश हो गया, "गाँव के बीचोंबीच प्रकट हुए हे गोपालस्वामी।"

राजा, मंत्री और तीसरे गोपी ने धर्मवीर के चेहरे पर पानी छिड़का और जैसे ही उसे होश आया, उससे पूछा कि आखिर हुआ क्या?

धर्मवीर ने बैठने के बाद राजा और मंत्री से कहा, "महोदयो, इन तीनों गोपियों को अच्छी तरह से जानता हूँ। कितनी ही बार मैंने इनसे दान माँगा। इसका मुझे अच्छा अनुभव है। पहले के दोनों अच्छे हैं, पर वे ईमानदार नहीं हैं। बिना सोचे-विचारे ही वचन देते हैं, पर वे उन्हें नहीं निभाते। जो गोपी दस हज़ार अशर्फ़ियाँ देने का वादा कर रहा था, वह मुश्किल से एक अशर्फ़ी देगा। तीन मंजिलोंवाले भवन को देने का जिसने वादा किया वह एक ईंट देगा और कहेगा कि इसे ही भवन समझो। परंतु यह तीसरा गोपी ईमानदारी का दूसरा नाम है। जो वचन देगा, वह निभाकर रहेगा। राजा के दरबार के एक महीने के वेतन का आधा भाग बहुत बड़ी रक़म है और मेरी जीविका के लिए काफ़ी है। अपने इस भाग्य की कल्पना मात्र से मैं बेहद खुश हो गया और होश खो बैठा।"

तब मंत्री ने गोपी को और धर्मवीर को अपनी असलियत बतायी। फिर राजा से कहा, "राजन्, अगर हम वैसे ही पूछते तो धर्मवीर हमें ये सच्चाइयाँ नहीं बताता। ऐसी परिस्थितियों की सृष्टि के लिए ही मैंने ज्योतिष का यह नाटक चलाया। अब यह कहने की कोई ज़रूरत नहीं कि इस तीसरे गोपी की ही हमें तलाश है।"

राजा ने तीसरे गोपी को कोषाधिकारी के पद पर नियुक्त किया। धर्मवीर की भी यथासाध्य सहायता की। शेष गोपियों को भी दरबार में उनके योग्य नौकरी दी।

विरूप देश में इस घटना का खूब प्रचार हुआ। तब से लेकर वहाँ के लोग ईमानदार बने रहने की कोशिश में लगे रहने लगे और वचन देने में भी काफ़ी सावधानी बरतने लगे। कोई वचन देने लगते तो उनसे कहते, "भाई साहब, मैं बेहोश होनेवाला नहीं हूँ। कोई ऐसा वचन दीजिए, जिसे सुनकर बेहोश हो जाऊँ।" यों कहकर वे उसका मज़ाक उड़ाते थे।

भूतनी का कमाल

विष्णु और लक्ष्मी की जब शादी हुई, तब सबने उनकी वाहवाही की और कहा, ''सचमुच ही कितनी अच्छी जोड़ी है! अवश्य ही इनका पारिवारिक जीवन भी सुखद होगा।''

पर बाद जो हुआ, वह बिलकुल ही इसके विपरीत था। दोनों हमेशा आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। विष्णु की कोई भी बात लक्ष्मी नहीं मानती थी। लक्ष्मी की कोई भी बात मानने से विष्णु इनकार करता था।

लक्ष्मी के चाचा के बेटे की शादी होनेवाली थी। तब लक्ष्मी ने बड़े कड़ुवे स्वर में पति से कहा, ''आख़िर तुम मेरे पति ठहरे। तुम्हें साथ लेकर जाना तो नहीं चाहती, लाचार हूँ। तुम्हें साथ न ले जाऊँगी तो जगहँसाई होगी।''

''ऐरे-ग़ैरे की शादी पर जाऊँ? क्या मैं कोई भिखारी हूँ?'' विष्णु ने नाराज़ होते हुए कहा।

''बाल-बाल बच गयी। मुझे डर था कि साथ चल पड़ोगे।'' फिर लक्ष्मी खुश हो निकल पड़ी।

''ठहरो। मैं तुम्हारा पति हूँ। तुम्हारे साथ नहीं आऊँगा तो लोगों की नज़रों से गिर जाऊँगा। किसी भी हालत में तुम्हारे साथ जाना ही होगा।'' कहता हुआ विष्णु भी निकल पड़ा।

वे गाँव की सरहदों को भी पार कर नहीं पाये थे कि सूर्यास्त हो गया। वे अब एक छोटे-से जंगल से गुज़रने लगे। तब पड़ोस के गाँव का एक आदमी उन्हें सामने से आता दिखायी पड़ा। वह उन्हें देखते ही कहने लगा, ''अरे विष्णु तुम! तुम्हें यह समाचार देने के लिए ही तुमसे मिलने आ रहा हूँ। तुम्हारी बहन के घर में तुम्हारे पिता ठहरे हुए हैं। वे अचानक बहुत बीमार पड़ गये। वैद्यों का कहना है कि उनका ज़िन्दा रहना मुश्किल है। वे तुम्हारी बहुत याद कर रहे हैं। जल्दी पहुँचो।''

''सुना तुमने, पिताजी की तबीयत ख़राब है। चलो, यहीं से रामापुर जायेंगे।'' विष्णु ने कहा।

''बूढ़ा है, बीमार हो गया तो इसमें क्या बड़ी बात है? उसे मरने दो। मैं तो शादी पर जाकर ही

- कामेश -

रहूँगी। वहाँ अपने रिश्तेदारों से मिलूँगी, उनके साथ खुशी-खुशी समय गुजारूँगी, बढ़िया खाना खाऊँगी। यह सब छोड़कर वहाँ रोने के लिए आऊँ? कभी नहीं।'' लक्ष्मी ने साफ़-साफ़ कह दिया। विष्णु ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, ''घर की बहू हो। मेरी बात मानो। इतनी निर्दयता से पेश मत आओ।''

''तुम, तुम्हारी माँ, तुम्हारे पिता सबके सब निर्दय हैं। तुम्हें जाना है तो जाओ।''

जब दोनों ऊँची आवाज़ में एक दूसरे को गालियाँ देते जा रहे थे तभी यह कहती हुई एक भूतनी उनके सामने आ टपकी, ''ठहर जाओ, यह क्या हो रहा है, क्यों झगड़ा कर रहे हो?''

भूतनी को देखते ही दोनों एकदम चुप हो गये और आँखें फाड़-फाड़कर उसे देखने लगे।

भूतनी ने फिर पूछा, ''झगड़ा किस बात पर हो रहा है? तुम दोनों की समस्या क्या है?'' ''मैं इसकी पत्नी हूँ। पत्नी होने के कारण क्या यह ज़रूरी है कि मैं इसकी हरेक बात मानूँ, इसका कहा करूँ?'' लक्ष्मी ने पति विष्णु को दिखाते हुए भूतनी से पूछा।

भूतनी इसका जवाब दे, इसके पहले ही विष्णु कहने लगा, ''पत्नी की बात माननेवाले का क्या कहीं उद्धार होता है? क्या वह मर्द कहलाने के लायक है?'' आवेश-भरे स्वर में विष्णु ने कहा।

भूतनी पशोपेश में पड़ गयी। फिर दूसरे ही क्षण उसने पूछा, ''बताओ, तुम दोनों में से अक़्लमंद कौन है?''

वे दोनों ही अपने को अक़्लमंद कहने लगे और इसी बात पर आपस में झगड़ने लगे।

''चुप हो जाओ। तुम दोनों की मैं परीक्षा लूँगी और इस निर्णय पर आऊँगी कि तुम दोनों में से कौन अक़्लमंद है। तब अक़्लमंद की बातें दूसरे को माननी पड़ेगी। तुम दोनों को क्या यह स्वीकार है?''

दोनों ने ''हाँ'' के भाव में सिर हिलाया।

भूतनी तुरंत पेड़ पर जा बैठी और दो थैलियाँ लेकर नीचे कूदी। भूतनी ने पति-पत्नी से कहा, ''हर एक थैली में सोने की पचास-पचास अशर्फ़ियाँ हैं। तुम दोनों को एक-एक थैली दूँगी। तीस दिनों के बाद ठीक इसी दिन इस पेड़ के पास आना। इस रक़म को जो बढ़ाकर देंगे, वे ही अक़्लमंद माने जायेंगे।''

विष्णु और लक्ष्मी ने बड़ी ही आतुरता के साथ थैलियाँ लीं और कहा, ''हम तुम्हारी परीक्षा के लिए तैयार हैं।''

भूतनी पेड़ पर जा बैठी। लक्ष्मी शादी पर गयी और विष्णु पिता को देखने गया।

ठीक तीस दिनों के बाद उसी दिन विष्णु और लक्ष्मी भूतनी के पास आये। इस अवधि में जो हुआ, वह यों है - लक्ष्मी पति के साथ न जाकर शादी पर गयी। वहाँ अशर्फ़ियों की उसकी थैली को किसी ने चुरा लिया। उसी तरह पिता को देखने गये हुए विष्णु की थैली को भी किसी ने चुरा लिया।

विष्णु और लक्ष्मी को डर लगने लगा कि थैली के बिना जाने से पता नहीं भूतनी क्या कर बैठेगी। दोनों ने मिलकर एक उपाय सोचा। उसी क्षण से वे उस उपाय को अमल में लाने लगे। दिन-रात दोनों ने मेहनत की और धन कमाया। फिर उस धन को थैलियों में भरकर वे भूतनी से मिलने गये। दोनों ने भूतनी से सच-सच बताया।

उनकी ईमानदारी पर भूतनी ने खुश होते हुए कहा, ''तुमने सच सच बताया, इस पर मैं बहुत खुश हूँ। इसकी भी मुझे खुशी है कि इस समस्या का हल ढूँढ़ निकालने के लिए तुम दोनों ने आपस में बातें कर लीं और एक सही निर्णय पर आ गये। इसी वजह से खोया धन तुम दोनों ने पा लिया। परंतु क्या, तुम्हें इस बात का पता है कि किसने तुम दोनों की थैलियाँ चुरायीं?''

लक्ष्मी नाराज़ होती हुई बोली, ''मालूम तो नहीं हुआ, पर किसी पर रत्ती भर भी शंका होती तो उसे ग्रामाधिकारी से कड़ी से कड़ी सज़ा दिलवाती।''

भूतनी ने ज़ोर से हँसते हुए कहा, ''तुम दोनों की ईमानदारी और पारस्परिक प्रेम की परीक्षा लेने के लिए मैंने ही यह काम किया। ज़रा ठहरो।'' कहती हुई वह उड़कर पेड़ पर गयी और थैलियाँ ले आयी। उन्हें दोनों को देते हुए उसने कहा, ''इनमें पहले मेरी दी हुई सोने की अशर्फ़ियाँ हैं। अब तुम लोगों की धन-राशि दुगुनी हो गयी। इस रक़म से कोई व्यापार करो और खूब कमाओ।'' फिर वह उड़कर पेड़ पर चली गयी।

अब पूरे गाँव को इस बात पर आश्चर्य होने लगा कि जो विष्णु और लक्ष्मी पहले बात-बात पर झगड़ते थे, अब क्यों एक-दूसरे को इतना चाहने लगे। उन्हें मालूम नहीं कि यह भूतनी का कमाल था।

पुण्य कर्म

प्राचीनकाल में अक्षयपुर में एक नगरश्रेष्ठि रहता था। उसका नाम धर्मपाल था। उस सेठ की पत्नी का नाम सुलक्षणा था। उनके पाँच पुत्र थे। उस सेठ को व्यापार में अपार धन प्राप्त होता था। तुलसी, अश्वत्थ एवं आमलक वृक्षों की वे पूजा करते थे।

धर्मपाल और उसकी पत्नी नित्य किसी निर्धन को एक स्वर्ण आमलक-दान करके ही अन्न-जल ग्रहण करते थे।

जब उनके बड़े पुत्र का विवाह हुआ तो बड़ी बहू ने अपनी सास को स्वर्ण आमलक दान देने से रोक दिया और कहा, ''माताजी, अगर आप इतना स्वर्ण नित्य दान करते रहेंगी तो फिर हम लोगों के लिए क्या रह जायेगा? आपको रजत आमलक दान देना उचित है।''

उस वृद्ध दम्पति ने नयी पीढ़ी के इस सुझाव पर संतोष कर लिया और रजत आमलक दान देना आरंभ किया।

जब दूसरी बहू आई तो उसने रजत आमलक दान देने से रोक दिया और कहा, ''माताजी, इतनी चाँदी लुटाते रहने से घर में भला क्या रह जायेगा? आप ताम्र आमलक दान दें तो अच्छा रहे।''

उन दोनों ने अपनी आयु के अनुसार फिर अपनी भावनाओं पर नियंत्रण किया और ताम्रधातु का आमलक दान देना आरंभ किया।

जब तीसरी बूह आई तो उसने ताम्र आमलक का दान भी पसंद नहीं किया और कहा, ''माताजी, घर की स्थिति ऐसी नहीं है कि ताम्र ऐसी सुधातु दान में दे डाली जाये।

अच्छा हो, इसकी जगह आप लोग लौह आमलक ही दान दिया करें।''

सेठ और सेठानी मन मारकर चुप रह गये और नित्य एक लौह आमलक दान देने लगे। घर में व्यापार की स्थिति अच्छी नहीं थी। सभी लड़के आलसी थे और बहुएँ कामचोर हो गई थीं। घर में धीरे-धीरे निर्धनता आ रही थी।

जब चौथी बहू आई तो उसने लौह आमलक देने पर भी आपत्ति की और कहा, ''माताजी, जितनी धातु आप लोग दान में दे रहे हैं, उससे यदि व्यापार किया जाये तो घर का कुछ लाभ हो ! आप लोगों को अपना परलोक बनाने के लिए अपने बच्चों का लोक नहीं नष्ट करना चाहिए। अगर आपको दान करना ही है तो आप रोज़ एक आटे का आमलक बना लें और दान दे दिया करें।''

उन दोनों ने इस पर भी संतोष कर लिया। लेकिन जब पाँचवीं बहू ने आकर इस पर भी आपत्ति की तब तो वे लोग अत्यंत दुखी हुए और वे दोनों तीर्थाटन का बहाना करके घर से चले गये।

वास्तविकता यह थी कि बेटों में बहुत अकर्मण्यता आ गई थी। वे कोई उद्योग नहीं करते थे और न उन्होंने शिक्षा ही ग्रहण की। धन देखकर उनके मन में बैठे-बैठे खाने की इच्छा जाग्रत हो गई। श्रम के बिना खाया गया अन्न चोरी का अन्न कहलाता है। इस प्रकार की वृत्ति हो जाने के कारण उनमें सदाचार का अभाव हो गया और घर श्रीहीन हो गया।

उधर दोनों वृद्ध पति-पत्नी सरयू नदी के तट पर एक वन में रहने लगे। वहाँ रहकर उन्होंने आमलक वृक्ष के गुणकारी फलों की आयुर्वेदिक औषधियाँ बनाकर उद्योग आरंभ कर दिया। कुछ स्थिति सुधरते ही फिर उन्होंने दान-धर्म आरंभ कर दिया।

अपने कर्म के श्रम से और धर्म के बल से वे लोग फिर धनाढ्य हो गये। उन्होंने एक विशाल मंदिर तथा भवन बनवाना आरंभ किया।

उधर उनके बेटों और बहुओं की नीयतें और आदतें ऐसी बिगड़ चुकी थीं कि भिखारी हो चले थे। उन्हें मेहनत-मज़दूरी करके पेट पालना पड़ रहा था। जिस समय सरयू तट पर प्रियंका नगरी में विशाल मंदिर बन रहा था, सेठ के लड़के उसमें मज़दूरी कर रहे थे और बहुएँ वहीं पत्थर कूटने आया करती थीं।

एक दिन सुलक्षणा की दासियाँ रजत आमलक का दान उसी की छोटी बहू को दे आईं। उस रजत आमलक को हाथ में लेकर वह रोने लगी और कहने लगी, ''मेरी सास भी इसी तरह दानी थीं, उनकी हथेली के मध्य में तिल था। हम लोगों के कुकर्मों और दुष्पापों के कारण मेरे सास-ससुर हम सबको छोड़कर चले गये। क्या जाने वे लोग कहाँ हैं?''

यह बात दासियों ने भवन में सुलक्षणा तक पहुँचा दी। सुलक्षणा को स्थिति समझने में अधिक देर नहीं लगी। उसने उन पाँचों मज़दूर स्त्रियों को और उनके पतियों को भवन में बुलवाया। लड़कों के केश कटवाकर उन्हें स्नान करवाया और अच्छे सुगंधित वस्त्र पहनवाए। बहुओं को नहलवाया। उनकी वेणियाँ पुष्पों से सजवाईं तथा सुंदर परिधान एवं आभूषणों से अलंकृत किया।

उसके बाद वे पति-पत्नी अपने परिवार को गले लगाकर मिले। इस बार नई पीढ़ी को शुभ कर्मों के आचरण की ऐसी सीख मिल चुकी थी कि उन सबों ने अपने अवगुण त्याग दिये और मिल-जुलकर रहने लगे।

चन्दामामा प्रस्तुति
अपराजेय गरुड़
चित्र : महेश
कमाण्डर नरेन्द्रदेव तथा पुत्र रवीन्द्रदेव की खोज में, जिन्होंने अचानक चन्द्रपुरी छोड़ दिया था, आदित्य सर्पदेश जाता है। एक युवा आदिवासी दम्पत्ति से वह उनके विषय में जानकारी लेता है। तांत्रिक नागबंधु के पहल पर नरेन्द्रदेव आदित्य को बंदी बनाने के लिए राजधानी जाता है, लेकिन घड़ियाल का शिकार बन जाता है और अपने पाँव गवाँ बैठता है। आदित्य तांत्रिक का सामना करने के लिए तैयारी करता है।

आदित्य और उसके अंगरक्षक शिविर को घेर लेते हैं और रवीन्द्रदेव के आदमियों को बंदी बना लेते हैं जो बिना प्रतिरोध के आत्म-समर्पण कर देते हैं।
तुम्हारा मालिक कहाँ है? रवीन्द्रदेव कहाँ ठहरा हुआ है?
महानुभाव, वे और आप्त पुरुष तांत्रिक के अतिथि हैं। वे दोनों गुफा के एक कक्ष में ठहरे हुए हैं।
आदिवासी, सैनिकों के बंदी बनाये जाने पर प्रसन्न होकर ढोल पीटने लगते हैं।
और जोर से! यदि तांत्रिक सुनेगा तो बाहर निकलेगा।

इस समय ढोल की आवाज!
ढोल क्यों बजा रहा है? क्यों?
गुफा के प्रवेश द्वार पर तैनात शिष्य बाहर निकलते हैं।
शिष्यगण आदिवासियों को चेतावनी देते हैं।
हे! शोर बंद करो! हमारे मालिक सबेरे-सबेरे शांति भंग बिलकुल पसन्द नहीं करते।

आदित्य और उसके कुछ अंगरक्षक गुफा में प्रवेश करते हैं।
मेरे पीछे-पीछे चले आओ। रवीन्द्रदेव को देखते चलो!
कुछ अनुष्ठान की तैयारी में लगे शिष्यों को कुछ पदचाप सुनाई पड़ते हैं।
वह कौन हो सकता है? तुम कौन हो?
यहाँ तुम क्यों आये हो? रुक जाओ! एक कदम भी आगे न बढ़ो।
शिष्य आकस्मिक आक्रमण से घबरा गये। आदित्य के आदमियों ने उनका मुँह बंद कर दिया और बाहर ले गये। जाने से पहले...
जैसा हम कहते हैं, वैसा करो।
जी महानुभाव!
क्या कर रहे हो? हमें कहाँ लिये जा रहे हो?
...शिष्यगण अपने हाथों में लिये बर्तनों और पात्रों को नीचे गिरा देते हैं जिससे आवाज सुनकर तांत्रिक सावधान हो जायें।
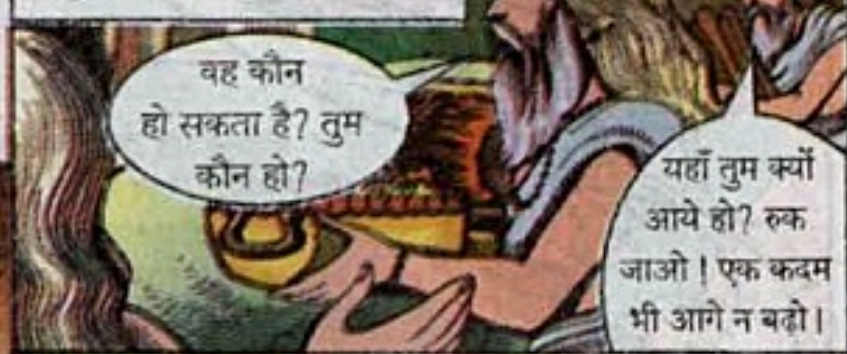
बर्तनों की झनझनाहट से नागबंधु जाग पड़ता है।
यह सब शोर क्या है? वहाँ कोई है?
कोई उत्तर न पाकर तांत्रिक अपने कक्ष से बाहर आता है।
क्या हो रहा है? सबके सब कहाँ चले गये?
बाहर आने पर तांत्रिक को ढोल की आवाज सुनाई पड़ती है।
आह! उन्होंने आदित्य को पकड़ लिया होगा। आज मेरा दिन है! मुझे ६०वें बलिदान के लिए तैयार हो जाना चाहिए!
क्रमशः

मनोरंजन टाइम्स
टिंकू टेडी अपने हाथ में बैलून का एक गुच्छा पकड़ा हुआ है। क्या बता सकते हो प्रत्येक रंग के कितने बैलून उसके हाथ में हैं?
पानी से बाहर कौन छलांग लगा रहा है? बस, बिन्दुओं को मिलाओ और पता करो।
क्या तुम इस आकर्षक लघु पक्षी को देखते हो? श्यामपट पर पक्षी के चित्र के अंश हैं। अब एक कागज पर उन अंशों के चित्र बनाओ और उन्हें ठीक इस प्रकार रखो कि पक्षी का चित्र बन जाये।
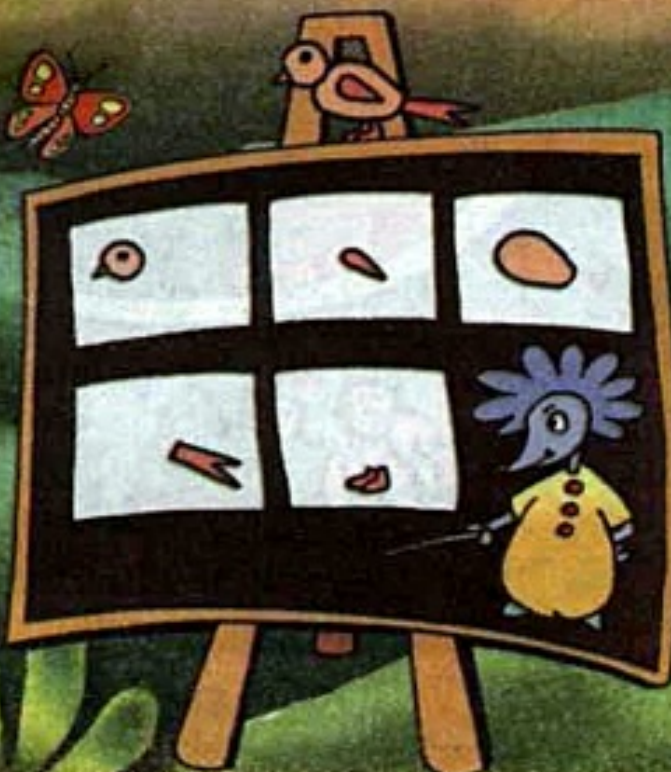
ये सभी पक्षी एक समान दिखाई पड़ते हैं, लेकिन इनमें से एक भिन्न है। पता करो कि वह कौन–सा है?
A
B
C
D
E
रोनू खरगोश को बिस्किट बहुत प्रिय है। उसके प्लेट में बहुत बिस्किट हैं। क्या तुम उसके हाथ के बिस्किट के साथ सही प्लेट का मिलान कर सकते हो?
1
2
3
4

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

जनवरी अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

कुमारी राधिका कपूर, C/o. श्री वी.पी. कपूर
एफ/ए-२१९, लाजपत नगर,
सहिबाबाद, गाजियाबाद,
उत्तर प्रदेश - २०१ ००५.

विजयी प्रविष्टि

दादाजी की पुस्तक थी, कभी ज्ञान का भण्डार।
नई पीढ़ी के ज्ञान-स्रोत का, अब कम्प्यूटर आधार॥

मनोरंजन टाइम्स के उत्तर (पृष्ठ-६४)

टिंकू टेडी के हाथ में ४ ब्राउन, ५ लाल, ३ पीले, ३ नीले, ३ गुलाबी, १ हरा बैलून है।

पक्षी D भिन्न है।

रोनू खरगोश का बिस्किट प्लेट २ के साथ मिल रहा है।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

चिंटू की पसन्द

मैसूर चन्दन बेबी
साबुन चन्दन के तेल और
बादाम के तेल से भरपूर है।
यह त्वचा के लिए
अति उत्तम है।

स्मार्ट बच्चे सदा
मैसूर चन्दन बेबी साबुन
पसन्द करते हैं।

द हाउस ऑफ
मैसूर सन्दल चन्दन
की खुशबू सीधे आपके
घरों में ८० से भी अधिक
वर्षों से ला रहा है।

CHANDAMAMA (Hindi) MARCH 2005
Foreign - WPP. No. 382/03-05

nutrine
KOKA NAKA COOKIES

They always enjoy **Koka Naka !**
They won a trip to **South Africa !!**

Shivam Sanjay Wankhede
Nagpur

Dirishe, Chennai

Raghavachari Murali Karthik
Chennai

Y.Sai Thejovarshan
Hyderabad

Hearty Congratulations and Best Wishes to the winners from Nutrine Koka Naka

Mukund Abhinav
Chennai

Suresh Gulati, Ghaziab

The Real Coconut ... Enjoy

nutrine India's largest selling sweets and toffees.